

Final Book 729

1747

2766

॥१॥ वेग न धरे रेणु म धु पाण म धु पादा म
धु त ल म धु र सु व म धु ए व धु त र विल म धु
प्र गित म धु ए विल म धु नु त म धु ए व प्र म धु ए व
म धु ए विल म धु ए म धु ए व धु त र विल म धु ए ॥
क र म धु ए विल म धु ए त र म धु ए विल म
धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म
धु ए विल म धु ए विल म धु ए ॥ ५ ॥ ए विल म धु ए
ल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म धु
ए विल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए ॥ ६ ॥
गो विल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म
धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म
धु ए विल म धु ए ॥ ७ ॥ गो विल म धु ए विल म
धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म
धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म
धु ए ॥ ८ ॥ इति श्री वेङ्कट कवि विरचितं
धु ए विल म धु ए विल म धु ए विल म

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री सावगिरि उवाच
गिरि वंद्य एव गिरि वंद्य नमः ॥ नमः शिवाय नमः
गिरि वंद्य नमः ॥ निन्दा इत्यादि विदुषां वद
ये वदः ॥ नमः शिवाय नमः ॥ नमः शिवाय नमः

६
रत्ने क कल्पितमनसहिमजले स्त्रानवशिडवा
वरुनामनसुनसिमुचितं मृगमदाचितं चन्द
ने जातिवस्त्रजानि रयतिरुत पुनर्वधुपंत
भा दिवदेवदद्यानिधेतवकतं संकल्पितं
धिकतु ॥ २॥ सोवर्णे मनिवन्दरत्ने रविषा
ने मृतकायस ॥ भद्रांपवविधपयोदाधध
तं रत्नकलं वा नर्त ॥ सत्मानं विविधोप
सकृदि कं कर पुटव यदे स्वता सुलं म
नमामयावि रचित पुत्रगृहोवनं प्रभो
॥ ३॥ इव वामर कुमद्रं विजृम्भितं
दातृदं माधर्व ॥ भो सव मर्दंग का
हातं पुग्तं वणि तं चन्दनतथा ॥ साक्षा
म प्रणिता सुखोविहितायतल्लमया सत्ये
नसमर्पितं तवविभो सकल्पि यतश्च वृतां ॥
४॥ व्यास्पृश्य प्रवितां पुत्रानि तस्मै नरे ॥ स
यवमानसि पुत्रा सर्वभावेन भागवतां ॥ ५॥

वास्वारी बोय का काव निगथ्य तयो ॥ ५ ॥ न को जागु जो भगा
 सह पाय मज्जु टे ॥ नय टिय काय स्वामी तदत्पः माले ॥ ६ ॥ मो
 हो लेन वपुस् के मोहन जी देनो ॥ मो हो ले वदल्य स्वामी को
 हल पा दीले टे ॥ ७ ॥ बाल वया पुषः निदी पदः हो न्य महु ॥
 वाई वमता या स्वामी वाया वः माले ॥ ८ ॥ गोरा वने गीन
 चोने गीन वना लाय रे गिरि सि होल स्वान भव नगते
 ॥ ९ ॥ अय ली धरी वपुस् वः अयानी मगा को ॥ अय माले
 वल वः कन नात या वो ॥ १० ॥ नात वलेन वपुस् वन लायो
 चुल्ला लायो केन ॥ लाई वमता या जिन लाना वरु लो ॥
 ॥ ११ ॥ य स्यात्तस्य यन जीत यया यथ्य तले ॥ यतले गये तया
 याकत नी वातरे ॥ १२ ॥

राम तपा

वसन्त तु भारा पाषा परवतः षोरी तु मने पाया ॥
 ५ ॥ घरी की तोरया कप एप हेरो वारे हात की
 गनी या हो हात मरी का कपरा सिर में राखे व
 रे मु बेनी बोला या है ॥ १ ॥ वाना पिना वन का ह
 रिया परीया विना नून सोते लनाही ॥ बाली में
 बोषाया साधु वरे मे वा बोली हो ॥ २ ॥ वरे
 तन सो षोरी या फोरे पंथर सब उल्ला या हो ॥
 वरे मुस्कोल कि यो साधु धदे तुं साग पोके व हो ॥ ३ ॥

की जानी गुनो धाय ॥ ३ ॥

वरीवो जालो से आपु खनै नावा के से कट दी
 न रात हो राम ॥ १॥ जल में चमके जले वामे
 गे द्याः राम में चमकित वार हो राम ॥ साभा
 वामे चमके स्वामी के पे की टिक सज वा में नवे
 हाल हो राम ॥ १॥ गमन करा उली धावे धाउली
 आपु चली यपर देस रे राम ॥ यह दुनु जो भया
 मरी गे लो मेरी सज वामे विन हमारा हो राम
 ॥ २॥ गाडी जो अट के अहल चलन मे रथ
 अट के गुजरात हो राम ॥ यह दुनु नयना व
 वना स अट की लटकी निववा अना हो रा
 म ॥ ३॥ यको पिंजरा मे दुनु चिरिया यदु मु
 नीया यक लाल हो राम ॥ राम वा रे वा प्रोस
 वामेरी राम वा से जान जा नु मेरी हाल हो राम ॥ ४॥
 जब हम वा ल म विववा वनि छे
 अब तो निववा अना रे हो राम ॥ मेरे मुख देखत
 से आननी जा विदे स वाः घाही करे ले वे पार हो रा
 म ॥ ५॥ सुतली रहली सपना मे दे पिन्दू आय विहवा
 हमारी हो राम ॥ दुतिग य विदवा मुली ग य पिह पाद
 दिया मे पद की हात हो राम ॥ ६॥

मेल २ मेल माव पापि मिर्जया के वो यजिम पुतमका
 धा २ मामववा गोवली ददिया कोः वपापि मिर्जया के वो
 नेजी मयल ॥ १ ॥ वेदक नया मद लव्ह को नया मद
 ॥ वपापी असिद्धि मिर्जन चाया वही हेत मवी ॥ २ ॥
 गाक पुन्यया मद लव्ह को पिनी मद ॥ वानी हेत सात
 साली वपापि मिर्जन ॥ ३ ॥

रामायण

हो हो नामय जुधन गुमान वन्हा यम तपहीन ॥ १ ॥
 हाक सया पकली सपलः लोय कावता रिका खान
 ॥ लुया मुचली व हो हया फुलीः खानया हुवान
 ॥ १ ॥ हायपन सो विचकनी लोके वाः लाहा तिस वरु
 या बुल्पा ॥ जामुदरी पतामि दोरी या हांक ग
 हया लन ॥ २ ॥

रामायण

दिन विद्या विचकनी साल तता ज दाम जो नाजू
 य धाल हना ॥ १ ॥ आवस भरुनी व वही ले
 नाजू समज ॥ पुसासी या सैन्य वके सोनी ॥ १ ॥
 लाहापो ना लिचापोन माधाय मय भाजु ॥ दिन

दिया विचकनी माल ॥२॥

राग पुवारे

नमस्तु श्रीभिस राजा जिप्रा भुस जायवाल मन
याकामनाः पूरययानावविदु न्ये ॥१॥ कर्म
सषायामदुः थयी न जोभनः वेलम पुठ खनरा
तका वचोने मालनी ॥१॥ खना वजिन मेषपुठ ख
रुमनि व वस सुखः नुगल मचोन दुख सुया के
नेल्हायनी ॥२॥ गन व न गनजी बोने व न्यठा
समदुः नुगल यातार सी थय वाय गठे मदु नी ॥३॥
धलो दुयलो नहि दी दिन लाल की गि के वजि व
वाय मालनी ॥४॥ डू नयो जे उडनी थय वि न ठि र
समदु ॥५॥ गल यातार मेशा वाय गठे मदु नी ॥५॥
वंचल पुठ ख कायः

T

मन्त्रिपञ्च

卷之四

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥

रदन॥ ५६ वंन विना जग शुनी दुल मयमा नदिना ॥ ५७ ॥

संस्तुते नुगलमदीनः गनव न गनचोने वनेंथा
समदु प्रभु जीत ॥ १ ॥ नकसंतत एगियावानः
लाववेन प्रभु दिन ॥ छिनजित वा इधका हग सस
ससना प्रभु जु ॥ ५ ॥ मा मववाते लय वद्विधका व
या प्रभु ॥ थानेग थे जु ल प्रभु ॥ विपल लपटे वानाथ
वातु दिन ॥ २ ॥ दिवालस्य वय मन पापि मा या जा
लं केन ॥ गन वने गन चोने वने था समदु प्रभु अ
ति दु ख जु ल ॥ ३ ॥ दिदु २ नृमानि न सारि रजि गमि प्र
भु ॥ हे लं चा स्य वपदस्य प्रभु निर माया नु ल प्रभु
नुगलमदीन ॥ ४ ॥ वाता वद्विहेल समदु दि गुलि

रामे व्यालिया ना वास जा मजनी सुख पूयास
 वदविलः पिध्यावने वदल विना भाजे नोपला
 य ॥१॥ रामे हि आइ बिलु माते पारी जितु ने वि
 आत्वा देयकः स्वानह फोल छित विय नापना
 पवने ॥२॥ रामे लव महु पुष्पली त होत फले ला
 नया वानः भवा यार म महु ज्हा लजु या फुला ॥
 ३॥

गठे जुलै रे जु जु गठे जुलै रे छिग ल म वी तले
 नयो तले म ज्जे गुं जु ॥१॥ छिग ठी ता आ चो
 ना ल पात के न जु जु ॥२॥ छिग न विया ल न ख ल्पान
 ले छिग के जक म न जु ल ॥३॥ छिग ल ता या वया
 म लुधन मो या वया म लु ॥४॥ मोहन या पा स वि
 ना ह ले रे जु जु ॥५॥ मा म व व विल म लु द जु जु
 जा विल म लु ॥६॥ कर म या भा विल ना ल रे जु ल
 ॥७॥ ल्हो क ल अज्ञानी या मे व म दु हि विना न
 ॥८॥ दया ल य माल प्रभुः अल व ना व रे ॥९॥

रामे व्यालिया ना वास जा मजनी सुख पूयास

नया वानः भवा यार म महु ज्हा लजु या फुला

रागाभस्तात

संसारसतलहेतुकावजनातामाता॥१॥
होमपतलधसलिलकचलायाहय
धामेः गुननहलविनातल॥ कामकोधला
भपापमोहसासनुकुकिम्बे किलसवि
नातलुलानावु॥१॥ हुया नोपापपुनरु
लिदुखदहुवनभालपमपुध्वध्वीन
॥ वृनेगननापगनजिअधमिमा नो
नाथाजिपुनहुमुखनताली॥२॥ जनम
मिदमेवलस्यविवाहस्यद्विजः तयम
तेहिनजितवाना॥ धर्मगिहवकाचा नी
पालिकोसवामफोनाः अवलया मरुकिजा
लन॥३॥ हलकहलयाभासाप्रोभेवगर
शः पगीपिगीदेवमाहतभवानी॥ लवनाप
निअज्ञानीनुदुगीदेववानी किरैमतेन
मपुरीदेवजनीमावा॥४॥

स्वप्रसावि जिमनबोधसमदु ॥ ५ ॥ वानलाकृत
 को स्वाननस्वाक नील स्वानः वासनासुकेद
 रास्वानरे ॥ ६ ॥ गुर्वोनसो स्पह्या धृति संचोनल
 वरे ॥ तलनजो स्पवनजो वलव तनेजो ह्यामरे
 ॥ ७ ॥ धृतिमंचोनल वरे तलन जो स्पवनरे ॥ ८ ॥
 जलमपनावदुचालरे ॥ ९ ॥ वक्राटुगलयाता
 रसिनेनाकरे ॥ वावाया हि हो न्यमालरे ॥ १० ॥

रागसिन्हासा

भाजुसियापमेवषनी ज्ञानापुकिरुहय
 यापु ॥ १ ॥ मीहि दुनाथपुलोक नभजल
 पुअनिर्धामदयकचोनेय यापु ॥ २ ॥ न
 मजुलकाति पुदयकलवसंगपु ॥ सें सालन
 मान्यथाना श्रीसातेपु ॥ ३ ॥ भाजुविलभिनपुषा
 लाययासियुपु ॥ मिजतलेलाइवजागयाभेडा
 लापु ॥ ४ ॥ निभिषाभित्तना सपुक्षसंचो न्यमाहा
 यापु ॥ थयवानीलेस्पवय गुरुमहालापु ॥ ५ ॥
 योसिवपुमिरवाकपुगाचोतनपालीपु ॥ कुना
 वलविचकनीखालवोपापु ॥ ६ ॥

तयमतेजीदुःखयाना भाज दिक्षो नयव ही ॥१॥
 नकसीछे जो वेले नोतु यमे काला जीन मास याक
 मनेने सहाला ही ॥॥ दिवजि वजुल धका ननिक टक सि
 लभाज सरमनापिसो यजीमहा ला ही ॥१॥ कजिके वय
 धालजिन कतये के गुल लोक नव बुजे याक मने ही
 कन तत्त्व कहे वय के जित सि स दय के लाया मधी
 बिया वयने ही ॥२॥ ननी छुनी कतपि स बुवाम दुम
 वाधा यव मधा मुयात केने ही ॥ थनी कन स वी ना
 यतले बुद्ध ने वय भाज लिपत स दुत्पा भल्या मा
 नी ही ॥३॥ मिमाया वानी मदुलि थु न्हे थुत्वा ना
 सनी कल हन जिक्ष फु के मज्ज ही ॥ कजिके वय धाल
 जिन वत यं के गुल ॥ लिथु हे थु मिले तु मफु टला ॥ ॥१॥

रणदेस

ताद तम धना जिमि क्षु वने तुः जिदु खया माहि मा
 दकोई न करु ॥१॥

लोकस्य न सुमलपी शोभि मम न च ॥ १ ॥ नोद
वर्जितजुसाः नरया आयुवर थिरणामचो गुढे ह्याकही
॥ नरयाज-मजस्य धरममभलपुः नियतमनरकसता
दिव ॥ १ ॥ मोहयावसजस्य बायो नतोक पुसा मधनयो
धर्ममिलानं ॥ मया कपरहितः ममाले तदुरगतीः बट
रमनया कालही ॥ २ ॥ बालस सवे ललपुः बानासम
मभालपुः ज्योठसअलमिदुवाक ॥ बायाववनेमानोः
मवन्धवनायः पिरतिधनजन संपती ॥ ३ ॥ गिरिवर
गोकुलचोम विज्याक धर्मधाट रत्नसंभुमली ॥ बां
बां स्यवा बाना ममाले तदुरगती लाई वपरचसमु
मति ॥ ४ ॥ सोबागु भवमदुः यतले चोने मदु भव
नजनमदुवाल ॥ भरणनरकः वनेगु थुगुलोकः भव
कन्य साधुजन हतासनं ॥ ५ ॥ लातेले भालपे मफु म
लाकावाना काय यनीव अशा माननी ॥ लानानलाय
मदु मनु धजनम लाठयो थुगु मारि ॥ ६ ॥ ययागुय
नेमदु यतले चोनेमदु वनो वजनमगादु तने ॥ यनेम
दुधसंसार वनेह पिती वनेगु धर पाय ॥ ७ ॥ हाक
ह अज्ञानिसिस्स दासाया मालहिता ॥ अज्ञानी धवभक्ति
वनाव ॥ ८ ॥

प्रलाप यो धृतवानासि वेदः विहितवहितवर्चो रच
 मखेडः केसवधृतमि नमो रीः जय जगदि सहरे ॥
 १॥ हेति रति विपु रटः रेतवर्चो स्वि पूछेः धरणि धरण
 किनुच ऊगारि र्वः केसवधृतः कक्ष परूपे ॥ २॥ वसति
 दनासि बरे धरु नितवल गनः ससिनिकल ककले बलि
 मग्नी केसवधृतः बुद्ध सारि र्जय जगदि सहरे ॥ ३॥ त
 वकर कमल वलि नख मधुत शृंगः वहि टिहि र्नय क
 दि पुत नभृगः केसवधृतः नरहरी रूपै जय ॥ ४॥ हल
 यशि विजमः नेवली मधुत वासन ॥ पर नख निर नति नि
 तय मुनाम ॥ केसवधृत वामन रूपै ॥ ५॥ क्षत्रीय
 रुधिर म जगदग पापी अयशि पयशि ष मिह मता
 पै ॥ केसवधृत भृगु पती रूपै ॥ जय ॥ ६॥ वितर शि दो
 कुर रोद के परी कम निर्यै ॥ दस मुख मोली वरि
 मनी यै ॥ केसवधृत ॥ ७॥ वह शिव पु
 विधी देव स नजल दाभं हल हरी मिटि मिलीत
 य मुनाम ॥ केसवधृत हल धा रूपै जय ॥ ८॥ नि
 दसि यनवी अरह सुवी जाती ॥ दस यह दय दभृ
 तप मुधाट ॥ केसवधृत बुद्ध सारि र्केस ॥ ९॥ मेद

एग देस

मुंबई साईली मायेमा १२९

कवीलानुवांदासेही शुद्ध

१ क वा जीर १ क वा जीर १ क वा जीर

७ वां जी वेमा मोरही बाको दे - १७३
२७

करम लेष नामे ते करो कोही लावो चतु एई ॥ कोए
 कोही लावो चतु एई ॥ १ ॥ चेंचपि को पाष एम को
 नोमी जन्म लियो हो अवध पुरी मुख धाम को सा
 सिखा मे गल कारकी ॥ वव जव दस एय जीने पाई दो
 यो दान गज एज इ वै थ्य दो दिन की व्याय की यो स
 भास व फुलन सौ दाय ॥ २ ॥ लोग तही बेसा क के कही
 वावा कालीनुः भूथ कहें दद्या जिवन तुम में सहता
 ही ॥ नगु मै दुष सव को दिनु तिच लोक की नाथ एम
 को बन वास करा दिनु ॥ कुमति तेरी सात को सिला आ
 ई ॥ ३ ॥ जे छर्पे व सव नुः भूथ जी को गदि वै धाई
 भूथ धारे काध पे हात धारे गा धन को उ माहा ॥ स
 रे नो ई च वात नुः कि म जा उ उ न की दा स एम को अजु
 धा की एजा गट ई द विसे बनी आई ॥ ४ ॥ आषा
 उ मे मिलन को स न को लागी एहो को नु एम वन
 मोह वता दे भूथ वात कहो ॥ नगु मै नुः आई
 नर नारी एय डोले सज वाय भूथ संग किनी
 तयोरी न दो सव साग ए को धाई ॥ ५ ॥ आवणा
 सिंघ मेघ पर पोचें भू भय भारी मस्त न जोर
 कट कट दल साज सारने को तयोरी ॥ भूथ जी नु

कृकस्तुष्टे राम सिया को काजें गुन लीका किजो
रमरी ॥ ५ ॥ भाडो भि माथ सीग मे दे भक्ति जानी
व. यह मे कंठ मुलक लफूल भाथजी को नजा कियो
वन मे ॥ भि को आभे काली तु भाथ ई को वै जा
ई. पृथाग मुनी के दास नो कि नु. पृथाग की रही प
रु. जरी आई ॥ ६ ॥ ऊवा का मेज जानो. मुनी न स
र पुष्टि पदे ता ता हात जोरें पीक म. कि नु को सि
ता माता को. अमेवरी जिवन सुफ लुभई यत नावन
छनो गृहो मुने आसिकी दिय लोट घा जा भए
भाई ॥ ७ ॥ कातिक कुच पृथाग से कि नु चित्र काट
आई अंग व भुत जता सा. धै राम न को मन पाय
॥ माथ धा नीचे धाई पों. हव उठाई ह्युम सिया
ल को मर ने नो नो ना भए. भाथ तुम सुख धाई ॥
८ ॥ अग हन भाथजी को गुवा सम जूयः तुम तो
भाई राजा किय वैठे अजु कामे जाई. लोग सने
सुख पाई गि ॥ वाहो वा. वित जाउ पिह धा
लो हाम आई ॥ लोट धा जा भाथ भाई ॥ ९ ॥
पुस मान सिया राम लख जा हो नु दिग ही भा
खनो जनक वामिषु सब समुदाय. कह भाप ने
जाफ नही विनाति. व न भाथ की नु ॥ राम कथा

कनका चर राखे डंडा भूय को दिखे लो
 राघव नाम भूय भाई ॥ १० ॥ माघ सना पे
 मान गइ जवामि डलगे राम जनक जनक पुर
 आई पदु चै भाय अजु भ्या मु ॥ वाह ग
 डी चादिनु राम वन्द ते कठि न जप म्मा भा
 थ ने किनु वडाई जाई से पाई ॥ ११ ॥ काग
 रामा सो हेरे मिया राम बर रा वडु दो वसकि
 नुः एव रामा ए अमर सव माए एषे भवि वेन दो
 ॥ राम प्रभु लोह मजु भ्या मु आई सिव मु नका
 दी आ की दी प्रह्लाद जषि दासन को धाई ॥ १२ ॥
 ॥

मो वसन को कहै ॥ माली को कहै सीता ॥ माली वसना को
 री ॥ १३ ॥ हना हनी वल जै गल से धाया लया ॥ प्रभास ॥ कुंद
 फात को हुरनी नी कल ॥ धर नी लया ॥ वल पास ॥ मोच
 उचदुर गो धर नी बोले सुना ॥ हुरना मेरे वात ॥ तन जी
 नका का ॥ कर्क ॥ धलु तली ये मेरे रा ॥ १४ ॥ सेव ये रा
 वचन सुनी ॥ हुरना बोले सुनी हुरनी मेरे वात ॥ धाया के
 धर मेरे वधती हवी वी वा व मेरे मा ॥ १५ ॥ मोयत
 ना वचन सुनी ॥ धाया सग ॥ नम य काली ॥ जल के पुरी ॥
 का रुक नी ॥ सुना मा ॥ साधु ॥ नती न ॥ की ॥ वास ॥ वा ॥

अतिशय प्रसन्न स्था मवाजवकाह सोतु मचलि
 आय ॥ १ ॥ अगमपंठ को नाम पुकारै आकृष्टो
 तनपाई ॥ ठाकै भयज प्रसन्न चटवाल वकाह सु
 दुमचलि आय ॥ २ ॥ को न्यतुमा ए जनम भूमि
 को न्यतुमा ए माई ॥ क्या होतुमा ऐ जात वै सिः को
 न्यतुमा ऐ आय ॥ ३ ॥ गो कन हामा ए जनम भूमि
 न्यतुमा ऐ माई ॥ जात वै मा ए देव वै लिकमल तो
 ए जात ॥ ४ ॥ कन व फूल के नाम नने होवा लव
 नाम तो ए काहा पाय ॥ कालि नाग जागो होत
 न्यतुमा ऐ मकाहा पाय ॥ ५ ॥ कैल वै लिकमल
 नाग नाः हाम को को न्यतुमा ऐ ॥ दूत भूत वेताल
 हानु वै लिकमल को को न्यतुमा ऐ ॥ ६ ॥ कविल
 मल वरुत होई सोही लेवली जाऊ ॥ कमल फूल गो
 देतो नाग मोहो जाय ॥ ७ ॥ कविल कमल हाम नहिले
 गाशिए हो कमल वाहीय ॥ अस्व मेठ जज्ञ करु क
 सशिए हो कमल वाहीय ॥ ८ ॥ शिरे कमल नले हो
 वाला नाम तो ले काहा पाय ॥ कालि नाग जागो हो
 तो निश्चय नुम काहाय ॥ ९ ॥ दूत भूत वेताल हाम
 मूवै ली हाम को को न्यतुमा ऐ ॥ तेनाग जागो होत

हामारे सदा होय ॥ ८५ ॥ जोगो २ कालि नाग काल पूरुख
 आय ॥ उध हो २ कालि नाग काल पूरुख रा होय ॥ ८६ ॥
 पुका ए काल ख माता पिता पुका ए काल ख भाई ॥ व्यातु मा
 राजा तवीसि मे नाग न काय ॥ ८७ ॥ नन्द ज सोठा माता पि
 ता वल व धु मे भाई ॥ यक्र ह मा ए गुरु ध जो धा काली ना
 ग को छाया ॥ ८८ ॥ आय हो जो ठा गुरु वि प को नाग
 लाई ॥ नाग मारी के त मा म ध ए पूरे मे जाय ॥ ८९ ॥

तुहे

रगाधमति

नत प्रसू मानीक ए ग्रह राजः सर्व भय शा त क र दिन ना
 थं ॥ ९० ॥ स्व म मा सित पिनी भो म ज गारिणः गगन
 व मा तिक र शि दि नाथ ॥ ९१ ॥ सुध ए अक वाले म
 ख मे र्वः निल व र्णी तु हे गा ति दुर्पः गुरु ज व
 मे र्व के ट दु ख हा रणीः दो व सव मा तिक र ग्रह
 राज ॥ ९२ ॥ मी क ता क क र म ग ल पि ग ला भ द्यो
 को ख ग ह भ द्र काली ॥ तु न ही डो ला गी र सा ए
 पा र्श्व म र्दि न २ भ ग त के पा न क र ॥ ९३ ॥
 भ क्त स क ल क्मा दा क वि दु ख वा ॥ इ स व का प र
 रणी ग र ए त के न मा न मा ॥

रतना रामको वंदे करम लेषा फल पाय ॥ १ ॥ य
 कवाफ दो वेता जन्मे आफ नै २ भाग भजन पर ॥
 एक वेता सजे पौरी समकै लेवन वा सिरत ना
 ॥ १ ॥ एक ताफ दो वेति जन्मे आफ नै २ भाग भ
 जन पर ॥ एक फुल के सजे पौरी यदु देवो विहा
 ल ॥ २ ॥ एक वास दो लकरो २ आफ २ भाग भजन
 पर ॥ एक वास को वनी मुरल या यदु को जंग
 ल वासी ॥ ३ ॥

रग निरुद्ध ॥ ॥ भक्त न मगत मोहित हो रगु नाथ जो ॥ १ ॥ हनाम
 कस प्रहा उडवा दगुरे बरु उठाय तामा सितुम ना तै हल के निकै
 बम्रा फोरे रग ॥ १ ॥ बा वंद जो वृक्षा वादे नगई मसु न ॥ २ ॥ मधा क
 प हो के समुद्र में काडि जाय रग ॥ २ ॥ धूप को दो तेज भय दू देव व
 साना ॥ गोवा धनु पान बर हो के गा कुल ग्याल बचाय ॥ ३ ॥ रग ॥
 काम धनु दूत पिलाये यलो हीत न गद गड ॥ जाहा श्रमित पौसन
 न को ताहा रहो तल हाय रग ॥ ४ ॥ दाह कर्मि गल में देवे गल में गा
 ल वषा ना ॥ आलन मा कप हा धहा प्र सुम रग सितो राम रग ॥ ५ ॥

बली हा रे जो न गकी का ताहे नाम लं जिना ॥ १ ॥ अधा मद्र
 रे आद का वसन लु रिधि गौतम की नाही रे ॥

भजो राधाक्षमो हरामदनसुगली ॥ १ ॥
 रमकटधर सरलकण्डलधर मोरपिपा सुभ
 कारी ॥ भालदिलकधर मटुकधर कानमंडुग
 लस्यरी ॥ २ ॥ मणिमालाधर रतनमालाधर वैज
 न्तिमालाधरे ॥ सखचक्रगदापद्मधारि पिताम्बर
 वनमाली ॥ ३ ॥ विन्दावनमैकुजगली लोभे रासर
 च्यो भारी ॥ ग्वालवाल सबगोवाचक्रायगोवरधन
 गिरिधारी ॥ ४ ॥ दादिमथनीयाकाडोवनीयाप्राण
 नाथसुरवारी ॥ सुरदासवली तुमारी दरसकोःह
 रि केचारावली हारी ॥ ५ ॥

रागरसलीला

कानयनाकुसकायथगनी ॥ ६ ॥ कटकाठकेमृ
 दैवजायः निवुकाठके मज्जीरा ॥ लेदोरैतेरेजतनू
 किमालातिनलोकभरमाडु ॥ ७ ॥ मद्धरी कृषचठी
 फलीहितारे कहुवावेनीरत्नाय ॥ नार्दीकिनारमे
 वकुलावैथ मद्धरी चुनिरषाय ॥ ८ ॥ तृपापहेरके
 कृपदेखायः सुनापहेरकेतसाय ॥ साखयानामो
 रे मंगलगाय ॥ नाचेवालषमुमुकाय ॥ ९ ॥

हेदईवनमनरथपुरेयानाविव॥१॥सिएचुरपरबुत
 तिथवास्तवनावेलेःसिपाहनघेरेयानाहला॥हेदईवन
 ॥१॥आमूववयाधरमनवैदिषानाचोन्यमालः॥वाम
 मववामदेयकाविव॥दईवन॥२॥नाहातुतीगतक
 दि तयातलज्वालकामा॥थजालफेनीवसुनान॥दईव
 न॥३॥श्रीश्रीश्रीमाहागुजउधारनोयावजित॥गोलत
 तयजिदीदेखाना॥दईवन॥४॥नेपालयाकनपटिः
 श्रीरावाहादु॥प्राजायाकुहुगरिजुत॥दईवन॥५॥
 हाकहसतातनमनः॥माहावयमवजुलजगतावनाहेन
 थपरागा॥दईवन॥६॥

राममनमन

मेनजिदविबुरमजनी॥१॥सुनोभवनसुनोमिहस
 न॥उनुविनुकुहुनसहायजनी॥१॥एनलकामन
 दनकासिधुदे॥दसस्थनअहेप्रागाजननी॥२॥
 विवकोटकोवलरेमाताः॥वाहीमिलिदनुभ्राता
 जनी॥३॥तुलसिदासदाससमेकोः॥हरिको
 वदरावितादरेध्यानजननी॥४॥

जनक पुर हो हे सखि से ले दुनु भाई जनक पुर हो ॥
 ध्रु ॥ सावरी राम की स्वराम नौ हर कोटि वदन
 की विअं कहु सकुधनु क किल सिल स्वाभित
 मुनी लिय यक संग जन ॥ १ ॥ सरवही लोक की
 दसरथ राजा रगुनी से मुनी है ॥ राम लखन दुनु
 हित दुनु वालख लोक कहै पहि चान जनक ॥
 २ ॥ वरे वरे भुप चुप होई वैठे धनु क कोई राजा
 ॥ कामल राम धनु क के से तोरे सिता लिय यक संग
 गजनक ॥ ३ ॥ लखन की कोसे क वि का रगुनी
 वानु राम लखन सिता सी ॥ सरजू के तिर भुव्या
 नगरी धावा हर पव ठाई जनक ॥ ४ ॥

राम

जनक राजा मोहरहि देषो श्री राम को रूप ॥ ध्रु ॥ भागे
 भागे विस्वामित्र पिप्रल मन भाड ॥ विच के करे ठे भलो भी
 राजा सो भाभर रा न जाये ॥ ५ ॥ कहे जो रगुनी मुनी ले राजा
 यह दुनु वालख काहा सो आय ॥ कौन नग के जनम लीयो
 है कौन नग की वासी ॥ २ ॥ कहे जो राजा मुनी ले रा
 गि अजोधा पुर के वासी ॥ दसरथ धा मे जनम ली
 यहै ॥ पुरावृक्ष अभिनासि जनक राजा ॥ ३ ॥ सब सखि
 याना मिली मंगल गाय तापर भोग लगे ॥ जो फल मा

राम राम लिला ॥ ७३ ॥

स्वयेतलकलना सिखोनहेगंगा माहा ॥ ध्रु ॥
 पापदुखचुस्ययस धरमदेहयास ॥ निरम
 लयावधुखरिरु ॥ गंगा ॥ १ ॥ विभीक्ष्णितोत
 किलमदधममानविल ॥ रमनघुसुहुनहा
 क ॥ गंगा ॥ २ ॥ हेथगुयापापनमनेनागुस्विय
 धुन ॥ विरथनकुतध्वननम ॥ गंगा ॥ ३ ॥ लाटलेनम
 भालुवा मलानां लिभालवाशय ॥ स्वर्गकुटिल
 थे ॥ हा ॥ हेगंगा ॥ ४ ॥ नुगलसजुलघालमेवनम
 वनस्माक ॥ ककतनयामैययानाजिन ॥ हेगंगा ॥ ५ ॥ लु
 मनवसुधोवीसिमलाजगवुवायमलाक ॥ पापनंसकेनधु
 गुतीत ॥ गंगा ॥ ६ ॥ आसगवहयाद्रतयतलेगुयास्यवा
 यथ ॥ मरवनाथेदुखीसलजिनगंगा ॥ ७ ॥ सरगाजिग
 नकनेमवुनाजीगलीधाय ॥ जितधासादुखओतकुल ॥
 गंगा ॥ ८ ॥ दवहसयाककायकाङ्गुतीलायायन ॥
 करमसमदुजिताकाय ॥ गंगा ॥ ९ ॥ विहमवुवाकासि
 मीनकणीहासलहुङ्गजिन ॥ विक्तेलखगवासाजिता
 गंगा ॥ १० ॥ लाहातनजलधिसेधिकवनतलविहम ॥ वग
 तनलहाजगंगातोस ॥ गंगा ॥ ११ ॥ नेपालयादुजपय
 श्रीरगाजिवमहोयथीविधिधायाम ॥ १२ ॥ तलेगुमहुख
 लसयाकपामदु ॥ वलेगुनविलजितकामिवाहा ॥ गंगा ॥ १३ ॥



अवगठाफिरैलंका रामके दुहाइ ॥ कहत मनो
 दोह मुनपिया रावरागः यह मति को न पसिका
 है ॥ मति धाहि न ले गति भयत ॥ तिह्याहरे
 टमलपार्यी ॥ १ ॥ जावन अवलातु मेका ज्ञानः सय
 तो जन का वापानी ॥ मेहर्व यद सा स ए ॥ ऊक
 कए जै स्य मेग भाइ ॥ २ ॥ जन कसि क न्या अ ए
 वं सि उ न दु न त प मिल भाइ ॥ पवन के पुन माहा व
 लि जो धाः ॥ सपना मे लंका जलाइ ॥ ३ ॥ यकल
 पुन सवाल नाटि सात म पु डवा वापानी ॥

राग वपा ॥ ॥ वन को चले दुनु भाइ को ही समस्त कहि ॥ ऊक
 राम बल है पिछल को मन भाइ ॥ दुनु के विद्वे सु धर शिताव
 भ्या जो हत की जाइ ॥ १ ॥ राम विना को सुने अजु ध्या नगरी
 लको मन विना चो पाइ ॥ शिता विना मे को सु धर मे या किन मोरे
 जन बनाई है ॥ २ ॥ भुव लगे काहा भोजन पाइ ॥ पास लगे काहा पानी
 निद लगे तो आसन काहा पाइ ॥ काठ को सलागी राइ मकल मपा ॥
 शोभित होवै माता को शिला बाहा ॥ ३ ॥ अभाइ एता दसा पा प्रा
 ताही लगे की कहि लाला के क मन पछ ताई ॥ ४ ॥ हिमि किमी गु
 दवा लतु है ॥ आइ वहे चो पाइ को न विहाइ न ले पिजतु है ॥ एत लको
 मन दुनु भाइ ॥ ५ ॥ कहिय म एपती पुन ल के कति के दमी भे तन जा
 ई ॥ आता दसा एती नै प्रा ताही लगी ॥ कहि म न पछ ताई ॥ ६ ॥ द
 सि म आता एत कहि दे ब एता का लाई पम म न

मन को न पसिका
 मति धाहि न ले गति भयत
 तिह्याहरे
 टमलपार्यी
 जावन अवलातु मेका ज्ञानः सय
 तो जन का वापानी
 मेहर्व यद सा स ए
 ऊक
 कए जै स्य मेग भाइ
 जन कसि क न्या अ ए
 वं सि उ न दु न त प मिल भाइ
 पवन के पुन माहा व
 लि जो धाः
 सपना मे लंका जलाइ
 यकल
 पुन सवाल नाटि सात म पु डवा वापानी
 राग वपा
 वन को चले दुनु भाइ को ही समस्त कहि
 राम बल है पिछल को मन भाइ
 दुनु के विद्वे सु धर शिताव
 भ्या जो हत की जाइ
 राम विना को सुने अजु ध्या नगरी
 लको मन विना चो पाइ
 शिता विना मे को सु धर मे या किन मोरे
 जन बनाई है
 भुव लगे काहा भोजन पाइ
 पास लगे काहा पानी
 निद लगे तो आसन काहा पाइ
 काठ को सलागी राइ मकल मपा
 शोभित होवै माता को शिला बाहा
 अभाइ एता दसा पा प्रा
 ताही लगे की कहि लाला के क मन पछ ताई
 हिमि किमी गु
 दवा लतु है
 आइ वहे चो पाइ को न विहाइ न ले पिजतु है
 एत लको
 मन दुनु भाइ
 कहिय म एपती पुन ल के कति के दमी भे तन जा
 ई
 आता दसा एती नै प्रा ताही लगी
 कहि म न पछ ताई
 द
 सि म आता एत कहि दे ब एता का लाई पम म न

अरे गोरीया काहे गुमान करेरी ॥ १ ॥ काहाते रा
माता काहाते रापिताः काहाते एजन नमभुमी ॥
२ ॥ अबल दुवत मोरे लाज कहाय ॥ ठारो मु
रली बजाय ॥ ३ ॥ नआफु आय प्रभूः नावि
ठिभितेः केस्य गरी दिल समझाय ॥ ४ ॥ चंद्र
सावि भजो बालक हृदय ॥ कल चरण व
ली हरी ॥ ५ ॥

रागरामलीला

कहु दरजन जान्यः दरद के दरद बतादे ॥ १ ॥
पिता मर के काहु न काहुः मोर मकदा मर कहि
योरे कह ॥ २ ॥ पुरु बजाय वपही मजाय दे ॥ मु
ठिपि पलल दुल्हा यु कह ॥ ३ ॥ नआफु आय प्र
भू नावा ठिभित्यः केस्य गरी दिल समझाय ॥
४ ॥ राज क जलि ॥ रहे गोरी दे दले लीया दुरि
या वु वि दुरि जा ॥ ५ ॥ नि पति ता के मीथ व
जि गो हो सत हमा हो ॥ ६ ॥
मेका सुकानो ली ॥ ७ ॥

मोग
मेनी
कीनी
मना
ना को
दे हरे
हा

हेराम याहा ताला गह जगत गवाह लनी ॥ १ ॥ सिर मे
 धरल्युः दधी धाम दुकीः हात मे लकीर एम ॥ का
 हावाट आयोति मि गवाल हो गवाल नी याहा तोला
 गह जगत ॥ ११ ॥ देखना मे खाना खाल गोपालः हा
 मसुं पुहल वात ॥ दधी यावेची २ हा म वृद्ध नय
 कवड नलागे जगत ॥ २ ॥ किस्का हो तुम बवाली
 गवाली नीः को नेटु मारो मानु ॥ किस्का हो ति मि वाल
 कुमारीः कही जाउ ति मो नाउ ॥ ३ ॥ कस के हो हमी
 गवाल हो गवाली नीः मथुरा हमी गाउ ॥ वावा की हो
 हमी बाल कुमारीः चन्द वदन हमी नाउ ॥ ४ ॥ आ
 गे की गवाली नी आगे चली जाउः पिछे को कुमा उती
 वात ॥ सोह सय गवाली नी सब चली जाउः याहा
 तालीं दु जगत ॥ ५ ॥ नल्पाय हा मलेः ल्यांग सुपा
 रिः नल्पाय गाडी वेल ॥ दधी यावेची २ हा म स्व
 वृध होयः याहा तोदि न जगत ॥ लाले ॥ ६ ॥ व
 चन तुम रि ल्यांग सुपारीः जियानु मरि वेल ॥ म
 दु की तुम रि गाडी चलाय न्यु ये की लिह जगत ॥

॥ ७ ॥ तना भी वाह गरि दीपा का वकें पत्र वाह मा मी लाक दे ला गरि दीपा को
 मोला डी वाह आउ का मा नी जंवा ७ ब ७ वा का वात वाहु या दु मा गवा का वा
 ७ डी ७ मा मे मला को कुरमा वी गा व मो नी भाइ पाउ डु मो कुर १ ७ ७ मा मे न
 १ मो नी लिह नी लाफ नी लाफ गरि पाउ या दु भी वी भी मर मडा डु न कु मा के

साजभयनही आयेरे कहे जा ॥ १ ॥ वेठे प
ताल काली नाग नाचे ॥ फनिपर निरकट नदक
हे जा ॥ २ ॥ जसुना किनारे कलम वासु विजै
जा ॥ वासु रिदे स दसुनी गोपिनि नचे जा ॥
३ ॥ घारे वेचदिया वन रेवे गोवा जसुना की
नारे रेवे जसमति मे जा ॥ ४ ॥ सुखा सप्रभ
तिहा रिदर सको ॥ ही के वारण पाध्या नल
गे जा ॥ ५ ॥

रग रासलिला

वो रलागत पा रे जुमन मे ॥ १ ॥ राजाद सथ
ने वागवनाया ॥ फल रहे फल वा विन मे ॥ २ ॥
दाक्षिण दिसा स्व आय कजागी ॥ आसन वा
ध के वेठे जोवन मे ॥ ३ ॥ काहा गय रामजी का
हा गय लक्ष्मन जी ॥ काहा गय जनक दुलारी वन
मे ॥ ४ ॥ वनहि मे रामजी वनही मे वनही मे लक्ष्म
न ॥ वनही मे जनक दुलारी वन मे ॥ ५ ॥ भिदालि
जागी मुख उन दाए ॥ ले गय वदन तिहारी वन मे ॥
६ ॥ तुलसीदा सप्रभ भजो भगतान ॥ गौली मे जा

रके बगल द पाना ॥ ६ ॥

राग रामलिला

कदु दरद न जाने दरद के दहवा लगे जा ॥ १ ॥ वही
 दरद के अम्मा जाने ॥ २ ॥ ही हृद या के कही यो रे ॥ ३ ॥
 पूरव जा उपसी मजा रु हो ॥ सुन के पलगु मनी जा
 इयोरी ॥ ४ ॥ पिता मर के का रु न का रु ॥ मार स रु
 ट सि कही यो रे ॥ ५ ॥ मुरदा स प्रभु कक्ष जनम
 भय ॥ सव सा धिमंगल गाइ रे ॥ ६ ॥

राग भजन

लठ धारी जोगिनी का मनी याः कस कस स कस
 खा कगई ॥ १ ॥ वेल के कली या चुनी ल्या मालनी
 हजार थ वै रे मालनी या ॥ २ ॥ वेलि व मे लो दो कली
 या भला ॥ यक स रे रे माली निया भला ॥ ३ ॥ तै रे
 लि मे चम्प कलि ल मे या ॥ जै से नी पत गद ना गी नी
 या ॥ ४ ॥ मुरदा स प्रभु तुमारे दर स को ॥ वै रे वी रे
 मह ले मे भला ॥ ५ ॥

गवनकरतजवना उपकारेः पथम गणेश कुमा
 रे ॥ १ ॥ दुमहा मयु नुमिला करकेः सैका कोरि
 माय ॥ जोवर साग सुफल पाय रुद्र की ना उप
 कारे ॥ १ ॥ स्तोत्र वना हो सकुट विराजः सिरपर
 सकुट विराज ॥ ऐक दन्त प्रकास कर के वी भुवरा
 कोरि माउ ॥ २ ॥ जो न रजिन्यय ह असति गा के सो
 न कोटः ख ह राय ॥ विष्णु एजो के मंगल गायरि
 द्विसिद्धि फल पाय ॥ ३ ॥

सागिम पदनी साधारि गगन मम पपदनी नी

रागविभुता

प्राण चन के रोय काया ॥ १ ॥ माई के हेगा वेता
 ह मा रावैनी के हेवे माई ॥ तिरिया के हेगा असम
 ह मा रुद्र नाता लगाय काया ॥ १ ॥ सैका को
 रि मा ॥ १ ॥ स्तोत्र वना हो सकुट विराजः सिरपर
 सकुट प्रकास कर के वी भुवरा कोरि माय ॥ २ ॥
 वन रजिन्यय ह असति गा के सो न कोटः ख ह राय ॥ विष्णु ए
 जो के मंगल गायरि द्विसिद्धि फल पाय ॥ ३ ॥

हरीभजतु पा को भलो सा ओर नही संसार मे ॥
 अरे मनुष्य मुख गमगाः ताने वाला वही है ॥ १ ॥
 दृष्टि जग मे देउ गोसाजी दुख सुख सब को वही
 है ॥ पिज गतेरी पुतली बनाया बोलने वाला वही है
 ॥ २ ॥ जन्म दिय के लेवता विधि हरने वाला कोही है
 धर्म के का आ पाप के का आः बुरने वाला वही है ॥
 ॥ ३ ॥ जनरे लोगो वचो साधुः काम को बलो मे है ॥
 मना कलन के चर्या के राग ~~का~~ गाव मे यका आता
 है ॥ ४ ॥ साधु सग के सगत कहे हरी भजतु पा धर्या
 है ॥ कहे विचार दुर्जति वाचाः जन्म तुधा के लेव
 हि है ॥ ५ ॥

लावनी

श्री कृष्ण की दर मन क ले आय तदा सब गो क लम
 ॥ हात चक पा वी अल भिराज्य अलख जगा उ ते नग
 रि मे ॥ १ ॥ जतो मकुट सिर गंगा वीर न्य रुखा बने को
 अधिकारि मे सनाग गले लपताना आल भजता नग
 रि मे ॥ २ ॥ माई जसो दा अना वैठे भवा जनि दले का नु
 मे ॥ को न दिसा सो आया होवा वीजी देषो गो कुल न
 रि मे ॥ ३ ॥ ठाल भरी २ के व माला लो वावाजी जि
 लि मे ॥ तुमारे भिक्षा राम नही लेगा लेजा आव

नेन गरी मे ॥ ४ ॥ हिर मोटी कंवन माला जोरार
 हे धर मेर ॥ जल्दी बो लो माई तुमारे बाल बंद
 रसन कर के जाते हैं ॥ ५ ॥ काला पिला सु रथवनी
 हो न जानु को हिट्टे को रिका ॥ कल्लो जन मे मेरी
 बाल बचावा हा नही ल्या उगी ॥ ६ ॥ मे तो जोगी
 जोगी जोगी जंगल वासी रह गो बाला पारवत मे ॥ य
 हि जो त सो जोग मिला उ निर् जन को भजन न रहे ॥



लातुनी

सज। तुम के मिलकर जाना मेरा दी लतम पर क
 नाना ॥ १ ॥ गंगे कि नार मे मदी जले चह न पुगत
 होई : जिस्की कार ए मे जो गवने : मेर पि यान ज
 लय है ॥ आके लतु म पु पद उ गया : कले आप थार
 का किया : कोठ लु है का बनाया : मेरा दिल तुम
 पर कवी रा ॥ १ ॥ कवा कली कच नारी कवा
 बोल न बोल : हा म पदो विदे सी धा जा हा मे कर
 पुगत बोल ॥ सज तु कपा दुर मो चली आया : पल
 गा म हल विदा जा : गंगे धरण न मग वाई : बौठ क
 र दुनु मिलि वाई ॥ २ ॥ सुना कह सुना रहे उता मेरी

कोने उपाय करे रे मे जाली म्मा मा भय क वरि वस जाः
 य ॥ १ ॥ वै वसा समे मद न से ता यः भा वै सा का वि
 ए दुः ख वा य ॥ ज्य ठ त पे व ड वि व ल घा म सोः नि को
 ना वि र अ ग न सो हा य ॥ ५ ॥ आय अ सा र ष ज म न
 वो ल्पः आ व णा वि र ह भ य फु ल वा री ॥ भा डो अ ग म
 पं थ न ही सु ज्यः भ री ग य ताल सु ताल न ल गे ॥ २
 ॥ आय कु व रः ष ज म न वो लेः का र्ते क दि प ज ले च व
 रा य ॥ अ ग ह न मे को नि को भा वै का र्ति ग य म्मा म सु क
 हे स म मा य ॥ ३ ॥ आय पु स सि त ज ना यः मा च मा सः
 मे लो न जा नु ॥ फा गु ण फु गु वाः मे को सं ग वे लु दि
 न वुं पा र क र ज दु रा य ॥ ४ ॥

बौद्धमास

जब सोन्यागी चले वेनी माधो: तब सो आग लगी त
 धामे ॥ १ ॥ उमरिया अमारी धरिया बाल: वि
 मलितर पवधार मे ॥ २ ॥ विउकी शतवास्तु त मे सो चित्त
 मे कहु सो चकरो म न मे ॥ ३ ॥ आवंरा स्या मा दुलकी
 य मे सुपुत के य कुतारे सो ॥ ४ ॥ व्याकुल होय के कुं जाली
 बोले: कुं कुं सक जालो विद्रावरा मे ॥ ५ ॥ ना डोगम

न मोहि न भावै नोग लीय स्या मा मधुवन मे ॥ हे नन्द
 लाल प्राण के स्य एषोः दृध जेवन वुरु पहतन मे ॥
 ३॥ कुवेर कुसलन पायो उधोपाधी लिय स्या मा
 मधुवन मे ॥ मूर स्या मा प्रभू आनी मिलावन ही
 तो प्राण ते जो दिन मे ॥ ४ ॥

राहु श्री गुरु पञ्चम

सुनो साधे गोविन्द नाम धरायः ॥ हरे रत्न अचराने
 हि पाय ॥ १ ॥ अगहत अगहन मास्य आयः सुनीत्रि
 न चानन जाय ॥ बंदे हं पुन सौतम के लोचन नाराय
 ण नाम धराय ॥ २ ॥ आवत आय यो वमास्य नाराय
 ण को नाम धराय ॥ माघ मास्य माधव आयः माधव
 नाम सुधारो ॥ ३ ॥ देवो फा गुण मास्य आयः गोवि
 न्द नाम धराय ॥ चैत्र मास्य रानीत विष्णुः कृष्ण मुनि व
 रर दोलाय ॥ ४ ॥ वैशाख मास्य मदु सोदन के वासुदेव
 सरण आय ॥ ज्येष्ठ विक्रम रूप धरायः सिंगि नाद के
 जाय ॥ ५ ॥ आषाढ मास्य बोदिस भिउपः थाकुरा
 वं न्य रूप धराय ॥ भाद्रपद मास्य मधुवन तरी जगत को
 धा करण को आय ॥ ६ ॥ माघ मास्य के सब रूपः माया
 न परगुन नन्द के ॥ आशु मास्य पदनाम के सुन्दर स्या

मवासुदेव आय ॥ ६ ॥ कर्तिक मास्य दामोद के गोविनी
 गण सब जमु नामे आय ॥ तुलसी पुजित ह गिरा गायः
 कश्चर राग उपाय ॥ ७ ॥ जो नर तुलसी पुज्य सो नर
 वै करि ठ मे जाय ॥ कहत अनाथ तुलसी भव सागा उ
 न पाय मुन सबी ॥ ८ ॥

बाह मास

पठ हेतु स नार वयरा वन वाल ध मेरी ॥ १ ॥ चैत्र भोजो
 धाजन मयरा मः चन्दन मयरा पवार धामः गज मेति
 याना चीका पुण्य ॥ मुन के कल स दिय न धरायः च
 रे धर म दिला ॥ २ ॥ वैसा क मा मरि दुः विष वलागः पत्र
 न चले वारु अमवार ॥ जे स जला व नु तल पे त मिलः सो
 गति मेरी के कह कि नु दियो दुः ख दारी ॥ ३ ॥ ज्येष्ठ मा
 त्यलागे अग राम लक्ष्मण माता संग राम चन्द्र पद कल ल सा
 ना ॥ वज्र ले ले धरति न को ल अमसा ॥ चल्प पद के
 स ॥ ४ ॥ आषाढ मास्य धरा रग उपः धोर ता ऊँ जल मो
 ल विल ये को शिला ओर पुर धाम ॥ भिजत है राम लक्ष्म
 मन धरे ता वार ॥ ५ ॥ श्रावण मास्य रत्नाय कि के स
 कट धिर सुभ मे जता ऊँ ज कि जम अग ॥ राम लक्ष्मण
 सिता मग रयनी अध्या ॥ ६ ॥ भाद्र पद त्य अणार धर
 आवे संग रो मनी सार वल नरि दु भिजत है धोर गा धर
 डि मरि फा रग लागी हो ॥ ७ ॥ लागि है अधि मा मरु

कर धाम करे मनर सनी सार योहि अरु अरु
 हिमम ॥ विप्रज वहो देवही दामः थाल भरी मोटी
 ॥ ७॥ आयो हे सखी कार्तिक मास मेरे करे जो दुख
 के फास थर धमानी कप ह्री नाम अंगी धामे अधि
 पारी कियो के कहो किनु ॥ ८॥ अगह कुवर करत श्री
 गार कपण सिवत सुने के तार पाटी पता म्य जल हकिवा
 र शिर पर विराज कसि गंगा किनार गले न वैजनी ॥
 ९॥ पुस मास घणत सार रयनी भै हरे को घा
 र ॥ कुस मास नपर मो वत राम के से करत वन मे
 विसरामः कुज भयो हे ॥ १०॥ आयो हे सखी मा
 धव सत्त मेनी जिड विना भगवत ॥ सिता राम वर
 रागति मेरी बैठे भरथजी डोला वै चवर वस न वै
 लपत ॥ ११॥ फागुण मच्यो सब को ही बुवा वंद
 न भौ गजा धोई बैठे भरथजी भरत अवि कप
 राखो वत कवि नार मेतो भैते होरी जी ॥ १२॥ गो
 कोही यह पद गावै वाह हि माम् सोना वै कु लठ
 करत विलासः गावै भवानी और पारधाम वन से
 जाय हो लधाम नराम् मित्य के कहो किनु ॥ १३॥

थाकुर दारि कोमे जाउ कवि जामिले कलभ गोपि ॥
 १॥ असार मास गिरि विरहिनि होतारः दलभ चले
 सधुवन को ॥ कोहि ल्यावरे सदेसः चलौ रे उधो का
 हा काय ॥ १॥ आवगामास मे मुहाउ नरे पहिले कुल
 मरगाउ ॥ सब सावि ~~कुल~~ दोलेः राधा ठोरे पकुता
 ईः कद रे उधो काहा काडो ॥ २॥ भाडा मासः गग
 न अधि यारेः यजि अधिया रात ॥ विजुली तरे पद्य
 न गन गारे जिया लारे जे ह मारे चलौ रे उधो काहा
 काय ॥ ३॥ अगहन मास गिरिः विनतियारेः थाकुरा
 गिरि सदेस ॥ सब सावि मंगल गाय राधा ठोरे पकु
 तई कडरी उधो काहा ~~ये~~ ॥ ४॥ कार्तिक मास मे जि
 रियारे यजि उज्जीरिया रात ॥ असुहा बुहात मति
 मा विजुली आम जिय अकारः कद रे उधो काहा
 काय ॥ ५॥ कवरा मासः दुख बनरेः पदो चलै गि वि
 विदेस ॥ दिन काहात चोठ जायरेः अव कोही ल्या
 वरे सदेसः अव के से कहु दिन रात ॥ कलभ काहा
 उरे ॥ ६॥

काहे देवनषोजन जाई ॥ १ ॥ सर्व-य-वासी
 सदा ल-पावही संग समाई ॥ २ ॥ पुस्य म-धा
 यो वासवस तू हे ॥ ३ ॥ ते सौ हि हरि वसै निर
 वर घट ही को जो भाई ॥ ४ ॥ बाह्य र-मित र-व
 को जानी यह गुरु ज्ञान बताई ॥ ५ ॥ ज-न-ना
 नक वे नू आ पाचि नौ निमत्प बाधु मके का
 ई ॥ ६ ॥ ज-ने-ना नक विनु आ पाचि नु नित्य मा
 न्य मके काई ॥ ७ ॥

रागदेवगंधार्ति

भज हे सिया राम नाम ३ गुण ॥ १ ॥ राम नामक
 मल फूल सत मन भ्रमर भूल ॥ धिक्कत त-र-स-गु
 मि २ अमृत हरि नाम ॥ ३ ॥ नाम नाम विमल
 निर-सग न-स-स-गति सग-त-दि-र-म-ल-स-दि-र
 पावत निज धामा ॥ ४ ॥ राम नाम वेद कुल-ठन
 समान ओर नुटे विविट तापल सत नाल-कुत-त
 भ्रम जामा ॥ ५ ॥ राम नाम निर-काल-तुत मिदा ह
 नम-कार-दि-ज्य-ग-म-ही भक्ति दान दिन २ प्रनामा ॥ ६ ॥

भजो मन हीरे वनु मन के लार ॥ ५ ॥ जा के मग कु मा ति म
त उपजत करत भजन मे भग ॥ १ ॥

राम ल्या ली ला हो

राम मे हीरे सोरे सु बा ॥ ५ ॥ इत से निकसी कु वरा चीका उ त सो
कवर क ना ही ॥ बेलत भा गु पर स पर जिली मिली सो भा लाला
लो भा मुख बालिन जा सो ध्या ल्य भा तत बहा ॥ ६ ॥ १ ॥ वा ज त
ताल न डी गु गु रि मंजरा सह नाई ॥ ब्रामत भा विर क म क म के स
रिता लो केशर सोल कल वज्र काई मन मे घवा गु लाई ॥ ७ ॥ २ ॥
राखो सेना तव सखियन को ज दु र उत धाई ॥ मृगत म पत गड्ढा मृम
धार को बर वस ता ला वर वस प कलि आइ माता को ना वन वाई ॥ ८ ॥
॥ ३ ॥ फ गु ता वि यन जाने न मे हो को र हो का छ पाई ॥ ले हो चुका
ई वर सदा दीन को तुम म चो च वाई वहुता दिन ददि मो वाई ॥ ९ ॥ ४ ॥

ओतेरे कविजावही मन मान्य हाम सोन बो
 लना माहा राज ॥ ५ ॥ हामारी केहे तो भोव
 दिलागी हाम सो कहि जी ॥ कविजा केस
 गमन दिल लागी ॥ कविजा केसिंग मनदी
 ल लागी ॥ उनही दे संग रहना वन २ वोग
 ना ॥ ६ ॥ हामारी केहे तो श्री गा उतारे दुग
 अजन कहु राज वोगे ॥ साथे तिल द्रव्य हाय वने
 सेह बोले माहा राज ॥ ७ ॥ जमुना की ना काना
 वेनु चहाय ॥ वंसि यो मे कहु अवा चगाय ॥ नही
 नही ताल पुनये मरी मरु मेह नामा हा राज
 ॥ ८ ॥ सुदास प्रभु तुमारी दर सदा ॥ कल चा
 ल पुन गावत ॥ हसी हासी बोल नामा हा राज
 ॥ ९ ॥

रागभजन

अभयलो होड अभिमाने कोही दि टका गुजगा
 ॥ १ ॥ गुगासाध काहा वो जाने २ वहा मिठाका
 तेहे ॥ विनु देवाजी नके अधाक्या जाने इमर
 तवाला है कोही दिन का गुतागहे ॥ ३ ॥ माता पि
 ता ओगे भाई भटी जा कोही नही आप नाहे ॥ रा
 म नाम दो मन कहिले वंदे पा उता नाहे कोहि दिन का

गुजरा है ॥ २ ॥ पावपवि सा भार्गविलकी आपनेम
 तछा को जाना है ॥ लातदास ने दयनवसत रगदू को
 वीले प्राला है को ही ॥ ३ ॥

रग भजत

गालनी टमहो रजवसि: मेरे वसितेन्य चोखली यन
 गे सो देखी ॥ ४ ॥ विजुली तरण्य एयनु अधारे के से

रग रामलीला

सौमधी चतुरंगमिली खेलन आह ॥ ५ ॥ पुथम विरा
 लबाबला मधमल कुरा कुरा एम मम एम मोटिन
 मत्वष एा के तापा एव रन मम एा के प्रतितम
 मोहा के गडभाड लागी वही सुखल या जजा
 भा मरा के ^{म के म १ १ २ के नं ज की र खा न के} मवापानी मठाह मुवद जि विवे
 न या गिलग वही नीयार तागा पु याइया ॥
 १ ॥ त्रिविदी मारि पाता नुन गुण के वाकि अ के
 ले विदिन्या बागा धा एा के बागा मगा के पद
 नपरी जितन लगे के का को दित भय सो घ मे
 लाता संग दिवन मे अव सिद्धि नवा निधी दसा
 दिता हे का एा दुलिय कहुलिय दम्बु दिनि
 के पु गानिल ^{मि} र किली मिली दाह मय ॥ २ ॥

हानं धैनागजमकायदृमिखुषीयदवद्विजामनपठ
तावेजुह॥५॥ जो म्मावाजीनः जालयापासायथे
लोमकाहीभजनयानाका॥१॥ वरुयादिनसज्जम
यज्ञावयाचोनी॥४॥ मयानागुगुयायाक पावेजुह॥
२॥ आवतुईचिभजनमयासा॥ लखचोएगिजुनी
हित्यमालीखव॥३॥ अभयानन्दनधालजसाधु
पि॥ व्याधुनुअतेयानाहभजनयानाका॥६॥

राग निरुगुन

सोमनचतेयाचोनेमदुथोसंसारेः थोकहैवनेतेल
वयाचोनकलेरे॥५॥ सचावावापीयारखाधायागु
जालेरे॥ जालखचोनेमतेहयिआनासकावेरे॥१॥ धा
नयो लथदकोतयाथासचोनीरे॥ जोनावयाथोसा
रवानाताथेमानोरे॥२॥ विमखुजिमखूपावनयावा
लेरे॥ धारिखुमकावहदिमानकालेरे॥३॥ जीगाजमुभा
मरुअतिमोलकुलवनेरे॥ शिवलिंगपमुपातीदरे
मनयायेरे॥४॥



हालजवान्परालजवानी क्पाजान्यतेरेपितरुकी
 मातकेगमानुदोदिनकाजिनगानि॥१॥दाहेन
 किमोदिहमःबोलपानहकेतानुथादिलामो
 रेःषाद्विषमगरुसवाफोहवेलीदेसवाकेचिज
 वगलावेचनपुनवाकेचिजमुममदेसरेसमवाके
 विरुवासरुपुहति॥१॥

राग

॥तालबोताल॥

मानामुन्धसोहेजाकेछाओदेखोमानानकारि
 हेहेरो॥१॥दीदेकेलुतनिहार

रामला॥ ॥वाहुनेगणपटिमंगल सदाना॥१॥दत्तहपुरवा
 लभतिमुधाजिवाखगोलपलेवानःलदुवालेजपमालमोदि
 पात्रोसेलालापिललाहाटिनतिहगेसेगणमरसना॥१॥
 सिद्धमदुर्बुद्धिकाएमाताकारुनकराडलनुयाखाका
 पातवसतनिषेहकलनागलाला॥नागकनमेमालगलेर
 तनकीकिसमान॥२॥वाहुनेअरेसिद्धिनवनाथोभक्ति
 गायोमदकेविगःलहयमफाटिहवाअकामेवम
 मडु॥२॥तमानकामान॥३॥गुलिलार॥३॥

लोवभक्ति

हालागय आटे देही प्रभु मेरी ॥ १ ॥ नुक्र मुची सो पा
साबेले: मुख अचल यो घेरी ॥ पांच पांडव मुख न
हि बोलै अवसर नागत तो प्रभु ॥ १ ॥ विना मोल
केता वाधा पान निद्र ककी केरी ॥ यमता वा
एविवे भुव वटा य काहिर हो चड घेरी प्रभु ॥ २ ॥
॥ दुर्पति वि धुसासन मुमुदे: मुख अचल य
घेरी ॥ पांच पांडव मुख नही बोलै अवसर ना
गागत तो प्रभु ॥ ३ ॥ चित्त रंग मोषा: चोरा बोलै न
उले नदी पाय यही ॥ आस पास धास मुद्र
ह पिच अमृत केरी ॥ प्रभु ॥ ४ ॥

रामनिगुन

मिता मिले केरा मसु मिलु: माहा निषत बुद्धि हमा
रो ॥ रावण भेष धो जोगी दार अनख जगाय ॥ भि
धादि ज्य मिता मत्त वनि: जोगी दार पहाराय ॥ १ ॥
कुय क हारि: भिक्षा जोगी लक्षमन दे गेरे वा ॥ रेखा
उप प्रताप धादि ज्य धा पतले वा पाउ रे पाउ
॥ २ ॥ कहै मनो धरी: मुनि पियसा वरा मन ध मेत तो
हि आय ॥ जानकी मिता तुम ही लाय समलक्ष
मन दु न भाई ॥ ३ ॥ हनु मान सै पाय जिकु वा संग

लकोमन भाई ॥ कोटी अंग द कद पा के कोठ
 धरो गावाहरे कई ॥ ४ ॥ भुली एना हि दे उगा सम
 गद रानी देवा ॥ मेघनाथ सी पुत्र हमारा क
 भ करा जो सी भाई ॥ मगन सुना ले कावनी है वा
 र सुन्द काई काई ॥ ५ ॥ द सो मि विस भुजा धामा
 दि ज लेका ॥ आवद बाना ही कान सुनाना ही सी
 न रयवाही ॥ ६ ॥

रामनिगुन

दुनु गड मिली धुरयवन वनः हाय हाय शिता को न
 हर ॥ १ ॥ सुधारम वन्दः सब वरा देव को शिता रमा
 रो को न हर ॥ सुन प्रभु यक आयः अर्ध म माहो व
 अ कर लुप धरे ॥ २ ॥ कहो राम वन्द सुखदा शिता शि
 ता विना मेरी ह दया बले ॥ काहा मित्य मेरी जान की
 नदी नी अव कै स प्राण धीर ज धरे ॥ ३ ॥ आज न काम
 न सुन प्रभु राम को ह को औ स स्व ग करे ॥ को न्य कार रा
 वने वास आय सो जानी वि ते धी र धरे ॥ ४ ॥ राम ले
 क्षमन दुः दुनु भाई मिली शिता के कारण वन को फिरे ॥
 जाते जाते जब देखे जतायू उध ग्रीध रात्र को सुक करे ॥ ५ ॥

देवो श्रीजगदम्बेभवानी मृगएज सवारी ॥ १ ॥ ध्यावक
 रतमवभुरनरनाए संगविरजित धरु एआहारे ॥ क
 वहुनएजितसिह सवारी जानतमवघटकरतावेहा
 रि ॥ मृगा ॥ १ ॥ विभुवराव्यावित जालफि जाइ आफुक
 हावत श्रीमहं माया ॥ हरिहर ब्रह्म नर एगुणगाइ
 ध्यानकरतकोशोपद मृगएज माह ॥ २ ॥ विहारी भव
 रा लाइ लक्ष्मीवाकर सोभित पाइ ॥ ३ ॥ आफु ही हट
 उल्लसकहाइ विभुवरा जननिरूपधराइ ॥ विनयन नोनि
 अग्नि जलाइ जावत अमृभयानक पाइ ॥ मृगा ॥ ४ ॥
 जावतर रा भै देत मराए भुम्मा निभुभभूमि पहा
 रि ॥ खेखा भुरअभुर निर्मुलक राइ नाना रूपकि
 रिपुऊल मारी ॥ ५ ॥ अदभुत रूपकिषड् चलाइ
 पलख उघाएत अभुरजलाइ ॥ कोधभयजवरुधिल
 पिलाइ जानत वहु विधि पानि विजाइ ॥ मृगा ॥ ६ ॥ एत
 नजलावोकि वप रहीत देसत चमकती विजुली समझाइ ॥
 तेतिमकोटि अमर साध रिपुतन मारी कारती विधी दरभारी ॥ ७ ॥
 प्रातभयजवशि सुनव नारी मध्यमात वदनवदे
 भारि ॥ पाहिरत कसरज्जल कट तुमारी योह
 विधान करत मारी ॥ मृगा ॥ ८ ॥ विभूवन लवकि

जवको
 तिसा
 तसवि
 संगध
 लाइ
 लछ
 वदना
 दवना
 इ ॥

गनीन कहाई लख चोरा शिजोती फिहाई ॥ तन मन
मर्क भोक्त लोभाई मन नाहि ध्यान तज न स गुमाई ॥
१॥ कदा यनी विश्व हल वर मुण्डाई इनी तन जान जगत
कि कारिनी ॥ रूप धरत सुधर नारे विविपति भय
जव सरणा तुमाई ॥ १०॥ वेहल वर करत वर क धरि
रूप चयत वर माई ॥ ११॥ कदा यनी रूप कि हे स
सहारी नव कोटि रूप कि करत विहारी ॥ मृगा ॥ ११॥
जन्म जयाई कहु नही चाहि जगत के चर नार ॥ सहारा
लोहत मन कि करत पुकारि भुव परत न नाम
जपाई ॥ मृगा ॥ १२॥ नव दयता ए मुखे लगाई काय
लय विव दार सन पाई ॥ बाहु मास गुण मुख लगाई
वित द प्राण तस गुण गाई ॥ १३॥ मृगा ए ज सवा

गण ॥ १ ॥

वनमें आजानको राम को वैरे ॥ १ ॥ मादिचठा यल
काः रावराफेः ववरणा ॥ कीचन मृ गाहोफे राम को द
वनको राम ॥ ५ ॥ कहे मनोदरीः बाटे सपनाफो बोली
बाटे ॥ हनु मानावर आय लका जला वरा को राम ॥
२ ॥ कहे मनोदरी बाटे सितो के सर राजा य ॥ कुबु
दि को ही दे प्र भू राम को सर राजा राम ॥ ३ ॥ कहे
मनोदरी बाटे इन्द्राजित पास बाधे ॥ गर जत के म
कराः काच राग राकी राम ॥ ४ ॥ राम भो के मे वि
को राको मनोदरी राम पाय ॥ चलो लू का मनारि
ताः अजो भाग मन की राम ॥ ५ ॥

राम भजत गे गो

बली हारी रेजिन गनी का तारे नाम ले ॥ ६ ॥ अ
धरम कर अधीकार वदु नसा ॥ सिध गे तम कीः
नारी नाम से ॥ ७ ॥ सबी पेर को प्रम सु पाय
प्रभु ॥ नात पात न विचार नाम से ॥ ८ ॥

कैसे कहती है सखी ॥ ५ ॥ भोज दोस्त पत्र
नदोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त
नदोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त
नदोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त दोस्त ॥ १ ॥

राग

नगर्व नमंज भन सखी सा

मेरो ३१० ७५ मा वदने होन

देखो श्री जगदम्भ भवानी सिद्धराज

राग निर्गुह

साज भयन ही आयर कहे जा ॥ धारो वेवही याव
नरो वे गोत्रा ॥ यमुना के नार रोवे नमसी मे जा
॥ १ ॥ दक्षिण दी सासा आयय कजोगी ॥ आसन
बाध के वेथे जो भरण मे ॥ २ ॥

कृष्णाले वन वीहार गदी रा धालेगी
तगाये कोः मल्लार ताजी सुन

ठोडे कृष्ण नद लाला वृज को वाला ॥ आय उधो
राधी को देवो मेरे ज्वाही नी ॥ १ ॥

हाय हाय राजा जहू बहादुर नरदेही कोरी स्वर्ग
 भय ॥ १ ॥ उनाह स सय तो ते समाल फाग मुदीहा
 दास तिठि रोज यक कली पु दान क्षत्र पाय अस्य
 जोग मे प्राण छोरे ॥ १ ॥ बडा माहा राणि हिरन्यक
 शकु मारि टि नही राणी साथ चल्य ॥ श्री वन्द क
 पुर भक्त मुर्ग व नाना धु पन्य दाहा किय ॥ २ ॥
 लव नो दिखी भोर हि चिनी धार धुत मे ना उफिरे
 ॥ अस्य प्रताप जहू बहादुर नरदेही कोरी देवन
 पाये ॥ ३ ॥ वितव स्व अंग वहा य प्राथ विं सर्व
 पभय ॥ सव दुनीया सो राम राम पुकारे राजा वि
 नु दुःख को न्य हरे ॥ ४ ॥ श्री राजा सुरेन्द्र विक्रम
 साह प्रभु को सदा राज्य को क्षत्र धरे ॥

राग भज

लव वारी जोगी कामिनीया क सक स सक मसवा कम
 य ॥ १ ॥ कोही सषि सव वृक्ष पुकारे कोही पुकारे
 आली २ मोह रासिया भैया वेवगी यामे सह की
 रहे सब कली २ ॥ १ ॥

को न्यवनमे जाउरु वर गोदवाल खलिय ऐवे हरिणि ॥
 क्र ॥ यक वर बाधाः अग्नीने जलाय यक वर स्वानल गा
 य ॥ यक वर बाधा जाल फि जाय यक वर आफु बदा हे
 ॥ १ ॥ सारजू के तिर मे अनु ध्यान गरीः समलक्ष मन भा
 ई ॥ अवतौ वेलामे उधारो प्रभू हात पदारी जदु गद्दु ॥
 २ ॥ पदा हरी हर फेत दिगम्बरः पदा हरी र जाय ॥ अफ
 न्याजिया को हामे नही जाये जो के वर नही बायर गुव
 ॥ ३ ॥ राम पवन स्व जाल उरायः अग्नी के मेघ हरी लाय
 ॥ बाधा के प्रभू दस दरवाजाः स्वान को बाघ लगाय र गुव
 ॥ ४ ॥ वन सोने कले हरिणि ना च धे देरु वर पाय ॥ दा
 सका वर यही गुण गाय ॥ नित्य उधी हरी पुकारे र गु
 वर ॥ ५ ॥

रुगानिगुनु

प्रेम पीर तेया नाम मरण याः गरुश या के ॥ धगु दुख फुल
 के छि मिगु सोर या फु के छि मिगु ॥ ध्रु ॥ थगु र मा से वो ना
 द को या ल देव प्रकास जु या वो ना ॥ वृक्षा विष्णु कृदु इ अर
 सदा शिव सह एक वत जंत गरी धो पा ना वो ना हे ॥ २ ॥

देवो श्री जगद लखवानी नृग राज सवारी ॥ १ ॥ खानक
 रत सव सुरन नारी संग विराजित धतुर आहारी ॥ २ ॥
 बहु नराजित सिंघ सवारी जानत सव घर निकरत वि
 हारी ॥ ३ ॥ विभु वरा व्यापित जाल कि जाई आफु क हा
 वत सीम ह माया ॥ ४ ॥ जब कोटि अंगत ससि संग चला
 ई चलत सिंघ पद नाद कजाई ई रंग विराग कि भुषन ला
 ई लक्ष दिवा कर मो भित पाई ॥ ५ ॥ आफु ही हनु वं
 सक हाई विभु वन जन निरुप धाई ॥ विनय न जोति अ
 गिज लाई जावत अभु अभयान क पाई ॥ ६ ॥ जावत रागः
 मेदी स महारी भुभ निभुभ के भुमि पकोरे ॥ सेखा भु
 निभुभ अभु ए निर्मुल क हाई ॥ ७ ॥ अदुत रूप कि यदु व
 लाइ पल व उद्यातु अभु जलाई ॥ कोटि भय जब क धिल
 पिलाई जानत वह विधि पान विलाई ॥ ८ ॥ रत जला व की
 व पर हात देव त व म कूत कि जुलि समाई ॥ तेति स कोटि
 अंग व साथ रिपु न मारत विधाई ॥ ९ ॥ प्रात भय जब
 सिंघ नव नारी मध्य साल व दन वरे भारी ॥ पीहरत कच
 र कुल क तुमारी यही विधान कर तुमारी ॥ १० ॥ विभु
 रास व कि जन निक हाई लखे चौरास जोनी धराई ॥ ११ ॥

नमजमनकभक्तिगगाह मननहीध्यानत जन्म गुमाई ॥ ९॥
 कृपायानिबिभहस्तवर मुगई: इनतिनजान जगतकिकारि
 नीम रूपधएवतमुंधएनारो विपतिभयजवसरणकुमारी
 ॥ १० ॥ वेस्ववरूपकहतचकधराह शिवरूप वयसवरणारी
 प्रसाकृपायनी रूपकहंससपारी नवकोटिरूपकिकात
 विहाए ॥ ११ ॥ मुग ॥ ११ ॥ जन्मजपाईकहुनही वाही जगतवकीव
 श्रवनाह ॥ १२ ॥ सरगलसिद सदीकिकारतकिकारि आठप्रहरत
 ननामजपाह: मुग ॥ १२ ॥ नवलधताए मुखेलगाहकएप्रत
 यविवदरसनपाह ॥ १३ ॥ बाहुमासगणभुषतगाहविततप्राह
 तसगुणगाह ॥ १३ ॥ मुगएवसपारी: देवो

रघुभक्तुति

राजतपा ॥ ॥ याहुनेगतपतिमंगलसदान ॥ १ ॥ दत्तहपुकिरिख
 लअतिमुद्रमिखाखगलपलेवांनल दुपालेजयमाल मोतिआजो
 तेलालो ॥ २ ॥ देललाहतिनति कुगसेजनसरसन ॥ ३ ॥ सिरमपुक्
 चंद्रकलपताका रत्नकुं पलनुयाखान ॥ ४ ॥ पातवसतभुतिलोवनिख
 हुकुसनागखाल ॥ ५ ॥ कनिननिमालगलरत्नपुतिकवरता ॥ ६ ॥
 माहुनेप्रसदसिचिंतननिविभगतिना सया नादको
 रुहाजमपुदिगुनिमहिमाअपा ॥ ७ ॥ मेव ॥ लाल मेवमदु
 दिहंमाननोनाजिनदिगुनिसरया ॥ ८ ॥

मनमजोले तोरे वार स्वाग गोविन्द नाम को या धारा ॥ १ ॥
 कया भक्त सुदा माता रौ ओर ही को ही काज सुधा
 रौ ॥ हिर रौ कस को मारे नर सिंह नाम धरौ ई ॥ १ ॥
 सासन को मान घटाय अमो गमुपति वर वधा य ॥ सु
 धाप हवत गनी कातारे उन को सोचत वा म्वा ए ॥ २ ॥
 दुर्जोधन धार मेवा त्यागी जाय विजुर भाग भजीर
 ॥ गज के कारण प्राण ही त्यागी दुमाते लिय पुवा ए ॥
 ३ ॥ वप्र सुधा माके दासि उतारौ ओर लै का पाते ए
 वरा मारे ॥ आज मिलिय प्रभु अधम उधार ए उन
 को सोचत वार म्वा ए ॥ ४ ॥ गोविन्द नाम सदा सुख
 धाई नही सुमरे गति नही पाय ॥ शिव दन्त के प्र
 भु कहै कर जोरी तोरे मापर वारि वाग ॥ ५ ॥

रामनिर्गुन

वस जो मरु को हिन ही अफना ॥ १ ॥ भाई भि दुते
 वै भु भि दुते ॥ दुते जगत सनी सार ॥ १ ॥ बन्दि भि
 जागा सूर्य भि जागा ॥ जागा आप न्य प्राण ॥ २ ॥
 खस मरु पति मे सब को ही आफ ना वित परे को ही नाही ॥ ३ ॥
 कहय का विर सुनो भाई साधू ॥ धा २ तम जाराम ॥ ४ ॥

रामया नाका वसनः भ्रमव सदान ह्यये मन ॥ १ ॥
 ॥ चौ नमद निश्चयः वन्य मानी क हरे जमया गुफा
 सिद्धाय रे ॥ धजगतदकोः दुखया गुवद नामा
 या कठिन गुजाल रे ॥ मन ॥ १ ॥ रामया रचना जगत
 को सपनाः जिगु जिगु गुमान ह्यये ॥ माम व वं नम
 यानाः तिरे यो निद्र यागु सुषरो ॥ २ ॥ चौ सि स ह्ये
 ह्य फु किद को फु के ह्य हिला हिला पिरति ह्यय
 रे ॥ सत गुरु संगत थि मुदु पानः सत स गयाना ह्य
 यरे ॥ ३ ॥ भागवत ने ना मेव मदु खनार सरि सुख जु ह्य
 मोर्ग निदान रे ॥ रामया नाम स्मरे जो व थि य फ ह्य
 मवु जम पाम रे ॥ ४ ॥ भागवत अनाथ या गुरु या सर
 नः नर कया मुल लोभ अभिमान रे ॥ साकल्य आसा
 रामया भजना मेव मदु जिते ॥ ५ ॥ सिद्धि विवन मा ५ ॥ ५ ॥
 रिछा मोजा पुरी के गा लो ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ६ ॥
 यमा नी न डु जी ५ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥
 साकल्य विवता सी गा जी ५ ॥ ८ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ८ ॥
 श्री मद्रु ती वेव व ५ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ ९ ॥
 दुरी के गा लो ॥ १० ॥ ॥ १० ॥ ॥ १० ॥

पदम्भाममेतपे गुम्फा वरसेनुनिर्जहकाजी ॥ १ ॥
 लदेकाप्रकाससप्तवनकासुरवृषनेकाकाको ॥ २ ॥
 हस्तदलपलकवलकवलपलनिर्भयकलकिम
 तिहें ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
 मलजातिजलकाटहें ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥
 विलुप्तहीनेशिवसाक्तहें ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥
 जनध्यानधरेअनहदचर्चाहोतिहें ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥
 वदकाहुवाहें वासाचो तालवलिहें ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥
 आथपेहृदजानुवरतिवाहासाधुरचना
 होतिहें ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥
 उन्नीप्रथिका ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥
 गोसायसूयासाफतेकिया ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥
 किबेथोयनिगूनकाकुंदायडाकिया ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥
 अलवनामकीफिरवहाहें विनिमैमूकामृ
 किया ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 वाजाअनहदका ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥

A piece of aged, yellowed paper with faint, illegible markings and a small red stain. The paper has a textured, slightly wrinkled appearance with various shades of yellow and brown. There are some dark, irregular lines and a small red mark on the surface.

एग विरहिनी

गिद्धिसिद्धिः भिमस्पनश्चित्रजितवरदानयामुनेग
॥ सुधरार ॥ ५ ॥ नकसाहिप्रजिव नयातियमभाल
यानेहृद्विहृद्विनान ॥ अथधाय मतेतिरीवृष
ने गुलेहवारण सदेत्या वीरनी स्वय ॥ १ ॥ बलमुने
गठेजिन हि गुरुपजोभन हि गुवालगणा वना वनीव
॥ धिरजनीया वतिरी २ सदे सब नावदको फको दयका वव
य ॥ २ ॥ वासगाडे थनी जिन बालवया पिरति सः द्विजिका
ईव मताया ॥ चंदा काय मतेतिरि २ दा मदु घल साल लक
पबद यका ववय ॥ ३ ॥ म्भवमेथना जिन गठे हने श्वप

सोपासनाय नमः
सुखं
सर्वस्व
सर्वज्ञ
सर्वशक्ति

एषा तु नया मी महलथगनाप ॥ बह्विवाचादखलरु
रुद्रि एतनीयवृत्तिरि मदेमवनाववय ॥ ४ ॥ स्वसेधम
वधुन अवप्रभु कर्तृणानः श्रयधुन विगु धर्म धुनी ॥
कायकन अथ धायार जिपा पिखनालाकनः लिथन
कावेयः मदुला ॥ ५ ॥ लायगथ धनीतिन ह्याताकिल
दईवनः ह्यावनुलाहि भजनयाय ॥ देवदेविया केभीव
भक्ति भाव भक्ति या यतिन दईवनद याद य मां ल ॥ ६ ॥
यदेसाह वपतीः श्रीरावाहादुं परजाया प्रतिपाल याव
नमरागि अवलसद को जानथुय काव व स थुका जानिसु
निधाय ॥ ७ ॥ १५३ सात माता मो वै उ १५३ ॥

भईरवमाहो काल गणेशक मास ॥ १ ॥ सिरममट्टक
लुधाः नरपूज्य मालां कोकाशुः स्वगोल विगति थिक
॥ न्यसाकेसि कंगुलीया जभिंत वृथा गुलीया थास
थासविन नाग याति सा ॥ ७ ॥ व्यतालवाहीया के सथा
नकास्प विज्याक मुमुहु न हिला वरसन ॥ भूतगणा
हित न कचया हाले नीति से बद्ध इन्ध रुथाम्प ॥ २ ॥
पालया क चपाति श्री मरेन्द्र विक्रम साह नेन नृ पण
वत्मान ॥ हाक ह अनार्थया दोनथास दामा तम्पस्व
तेले करुना तथाव ॥ ३ ॥

राग तुलसीदास

जो सीठि चतुरंग मिलिखेलन आदि ॥ ५ ॥ प्रथम विस्म
बादल बादल मखमल मूरण मूरण मत्वखण मोनिन
वखण के तापर चरण सुमरण के प्रतित मनोहर हृद
वखल मगि बहि सकल आज जाभाषण को

जीपते तरुण ग्य कल नाथः श्रीवाग कग्दीनी सगतावन
 मो ॥ १ ॥ वदन निलोचणी चरणमिमलात् पलः लोल
 वंद दध मधू मूले ॥ कमलकोमोदके पास अकुस
 धनू क मूली को क्षो धरुति र्धा रे नमो ॥ १ ॥ तपु कां
 वरु भारु विप्रतुल गियो धीव सी हृदय विव मो
 भितारि ॥ कनक मालि कुण्डलं सेल मकट धां दध वरु
 माली मधू वरु विहो नमो ॥ २ ॥ वरु कुत जो धां कण
 कमनि कण्डली श्रीम कण्ड मय केत मो ॥ नित्य उ धी स्य स व
 जजल न काडी मूनी धन्दे श्री पति जय मय पू का रे नमो ॥
 ३ ॥ अर्वा रिसि वय मे दिन के मासे न को दिगी ति धी गिरि
 गह उ नद मो ॥ भक्त जन लकल का जो गो श्री मा धा स
 हित हरी हरी हरी पू का रे नमो ॥ ४ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ गोविन्द गो क लानंदे गो पा
 ल गो वि वल्लभ ॥ गो वर्धनं धरं धि रं तं वेदे गो मालि प्र
 यं ॥ पिता वरं पद्म ना न पद्म अ पार मे सो तं मं ॥ को प
 त्र पा मान दे त वं दे पा म्प अव ॥ २ ॥ ना त प री निग
 का रं ना विं ज रे त मं म र्मि ह ना ग ना थं च त वी दे न
 कां त की ॥ ३ ॥

विहिहिनिःसिन्हाज्याः पुर्वो विमास ॥ १ ॥

हरिः जिकाय पुता दईवन विलही ॥ २ ॥ अयले माजु हाय
दिकाय मज्जा धाल क्वार निलिगनाव विवही ॥ अयत्यभ
लिचामयजु जिकाय याल जगाल मयु जिकाय जोलीग
न्यसु हो ॥ ३ ॥ जिवया लालही महु नी दिकाय मज्जा
यधाल क्वारणिगणा पुकाव वन्य हो ॥ अयत्यभलीचा
मयजु जिझया ताल वाको व द नतल पल्हनातय हा ॥
४ ॥ दिकाय मय यकाजि गठे चोन्य माजुः बहिषा वाथ
थवक्षम चोन्य ही ॥ अयले भलीचा मयजु क्वत्रनेधाय
मते माजु भली थिथो खाल स्वय ही ॥ ५ ॥ मयन विद्या
बेले मिखा नखो भित स्पः गा वोत नखो भिद्रु स्पः नाल ही
॥ सुदिन सुवेला मंगल या नाथा सः खोय भते थिरुजो
याव ही ॥ ६ ॥ जवन मगन फल खवन नखो भिद्रु स्पः जि
प्रभू खो स्पः नाल ही ॥ पेतया ज्याल क्काय का वेले जी
प्रभू लिम स्व स्पः नाल ही ॥ ७ ॥ जिप्रभू मनी व उजी
निधे नेन मन जिप्रभू वन वास जुल ही ॥ सिंह लला मा
ने गुती मिगा लोहत पुगत स्पः नाल ही ॥ ८ ॥ गुमूलो व
वन मयिल यो जिप्रभू नना नीथन काव विव ही ॥ चान्ह
मलना चोना जिप्रभू मंतधका खोयाने खो भिरु सि द्यात
ही ॥ ९ ॥ अयले माजु हाय दिकाय यालि सल महुः दिला
यजामहु थो वल्हा व ही ॥ मुनाने धाल भली चो ख वल्हा व

को नई छ नानी तिमि आजो याहा वसि जोउन भोली लो
 जाउलो स्वामी मानी वस्पा रुदी धर नुवे तोली ॥ १॥ वस
 वसभनी तिमि मुखले तामे होति वसो भन्या के हो देन
 पोती मिली घा रुप री आजी को धरी मा ॥ १॥ देउए
 एउपठानी देन सामु सोता सोटी देन मूकालो मूलुका
 ली देन मुखमा वसोली ॥ २॥ वस मादु वारी तिमि मुख कामे
 स्वभावसी मिलि जुली पाई पैली जन्म गुमाउली ॥ २॥ वस
 वसभनी तिमि मुखले तामे होति तिमि चित्तमा कयाह कयाह
 न त्यो कया के जानी ॥ माया मारी माईटी मेरी दिदी येनी म
 हताए संगी सर्वे माया मारी आउ नुक ल्यगी ॥ ३॥ जान
 मायु धरि कि नाव मोटी उलासी सुन के दु कि या सुन को सिध
 हिए को अगुठी ॥ हात बु हा कए पहरे लाउली धर को वलन
 धामो लोको सि क होली ॥ ४॥ आधिको ति ठो २ पदी जगति ठो
 नानिको धरम न कोरे प्रभु पदी २ आउला ॥ मधुरा वरास
 नी स्वामी को वचन मामी गति पटी ठानी दन रसे ले वसु ला ॥
 ५ ॥

बालभली वाजिनु गत यति यम मू ही ॥ ८॥ सुथन्हा पी दव
 वसि वसुल वना दिका प्रयाहिठि पोसी बाल ही ॥ ९॥ पेत या ज्वा
 नली विया गुमत वतले तिका यया गि व दनी आसा ही ॥ १०॥ पेत
 या ज्वा लले मतजा विया जिन मतजा तुलु स्प वन ही ॥ ११॥ अयले
 मातु टाय दिका सम दयका जीवो ना या सिद्धि फल मद्रु ही ॥ १२॥
 ॥ स्व पु कर व न क्षम स्व स मा रा चो ना चो ना या क द जी तु व न व

तयमतेजिदुखया नाभाजुहिदावो नाथन ही ॥ १ ॥ न
कलहि जे ववेले नेतुयम कालाजिनः पालायाव मेने
नेम काला ही ॥ २ ॥ छिवजिब्रजुलघ काननी कटकी मिलभा
जुः मरमनपिस्व यजिम काला ही ॥ ३ ॥ न्हिया न्हि थि न्हि
थि छितु २ नामकास्य लदान थ वक्षस बो न्यला ॥ काय
दहता सचाया यने गुल छि तजिनः कनमास ववा वाय
कायने ही ॥ ४ ॥ लोक ~~ने न्हि~~ कनमास ववा वाय
लावा मधी पिया वयने ही ॥ ५ ॥ जिबो ना थ वक्षस
न्हि के हलवार म्भार मेले विय यात खजुल ही ॥ ६ ॥ छि
खत मे निम्पि उपत खकने धन नना न्हि दावो नाय
वही ॥ ७ ॥ कनजा वय धान यने गुल छि तजिनः लि
धु न्हि थु मिले जय फु हला ॥ ८ ॥ मिसाया वानी मडु न्हि थु
ववा ना सनी कल ह नजि सफु के मज्ज ही ॥ ९ ॥ थानि
कनम वो नायत ले धन कन वभाजु लिपुत स दुन्हा
भन्हा माली ही ॥ १० ॥ ननि छिने कट पिस्म ववा मडु म
वा धायूः थवन चा गुयात केने ही ॥ ११ ॥ दुख याव
ला ना भोज नेव मडु छि छि वेना नः विवजित मनो
थयाना ही ॥ १२ ॥ अति दुख गुल भोज धरमा छि मे गुल

कनकधराद विज्ञानसदयको । कविप्रभुनेयागवतद्वि॥३॥

लिपतमलन्याजयुद्धिर्ह्य॥६॥

रागाभि-हाऽपा

वृक्ष

प्राक्नुदयाथेन्यात्प्रवनेमप्रहृष्टं ह्वासे वा ॥ १५ ॥ व
चलेत्यमेवाचन्द्रमाया व्याजना विभूतेनवानलाक्रमैया
लयवा ॥ नृत्यादितायोवालाहातिलै चूल्यावाः अजलनवा
नलाक्रियातिमिकावा ॥ १६ ॥ नफातिनेयाल्पास्त्रिधाः म
ननमतेनासुख्यस्यामेवा ॥ लालिकलन्पालेवा पाथहिना
घोतावा अनुश्रु-चाक्रेवहथोहेन्यामेवा ॥ १७ ॥ लालिक
फलकोथावा पार्थीहिना घातावा देनेधकात्वबाबेल
सांटा बरुवा ॥ मिथितुरीहित्वंतप्रथजटयाभव
चा मफेनाथे फेनेम प्रहुडिल्पा मेवा ॥ १८ ॥ उज्जाना
कपिवा कलाकायल्पा त्यवा कन्नरापगुवकेले कर्णनि
रेवा ॥ आजिथवा वातावा लाउथवा देतिवा के
थ कुलामलाहमेया दुद्रुवा ॥ १९ ॥

होहादेनुगत महीन गनवनेगनचोन्य प्रभुनिर
 मायाजुल प्रभु ॥ १॥ नक सतरु नोयावान लोव
 चनपुभूदीना किनजित वाइधका लगससं सरव
 ना प्रभुजीन ॥ १॥ मामवुवातो लटा वद्विधका व
 याप्रभु ॥ मायामदु मायी केका बायसते प्रभुकी
 नजित ॥ २॥ हितु रे नमनी व मारिजोगन प्रभु ॥
 बायावदी देल मदु किगुलि विरहम प्रभु ॥ ३॥ दि
 वलि स्य वय मन पापिमाया जाल केन ॥ तजे ठासम
 दुप्रभु अतिदुखजुल प्रभुजित ॥ ४॥ कयावदी दे
 लमदु किगुली विरहम ॥ केनथासमदु प्रभु गनवनाह
 नेयो प्राण ॥ ५॥ समतसमय सु त्वानहो स्य केन प्रभु
 ॥ दईवन विलजित धुली दुखसियमाल ॥ ६॥ गेरुवाया
 लनकी नावव प्रभु मूल दुखा ॥ मईवजि विनधी व
 चनाप होनका विवजित ॥ ७॥

॥ मलि ॥ ॥ मः ३१ व शरत संजुलीया ॥ मः ॥ नदि ॥ १८ मः ॥
 ॥ १॥ ॥

मुरली मधुधुनी वांजपर सननननननननन॥धु॥
 नाजावजावत ताकत धुमकत ३ दिदिदिदिदिदिदि
 दिदितन मृतता॥धुन ननउ मगे मेघ गिरियेः
 मिलि मुरयावत ननमु ननमु॥१॥

राग भजन

मेत मुनान ही जाई हो एध थोर हे गोपाल रे मा
 हे मेत मुनान ही ॥धु॥ मेद दी वेचन जात वदावरा
 नाचत गोपिगुवारे महे इह वधी याके दान मागे
 जसोधा के लाल रे माई ॥१॥ पितृवर के कादन कोह
 गले वेजत के मालारे ॥ कवन बली न भयल हो एधे
 हरे लिहवन मोरे प्राण रे माई ॥२॥ नमनो कति एति
 एध नुवहावे मोहन वंसि वाजल रे कोन चरि नमय
 ल एध हरी लिहल नमो रे प्राण रे माई ॥४॥

राग के पत ॥ ॥ जो रिस गनय तिअ रेग
 करत गुरु गने साके ॥ य करव न ग गुय
 दन सुंदर भुली मुगति दुपाल मलीक
 रुरु गने साके ॥ १॥ श्री सरमा

न्हियाहिधं कालधेभाजु ममयमतेही ॥ १ ॥ मलिन
 नलियधुन मामववीविलमधु धरमतालतेमतेही ॥
 उमामोतालतावहिगुवर्वचनमजिन लियतलगधे
 नृममियाही ॥ १ ॥ ॥ हिगुवर्वचनमेंनित्य मनमिअ
 येलनूलभातु धरमतहिजिनमतायाही ॥ चानीहि
 ननुगमहिमुयाफेलायभातु मननिबोधविव
 ही ॥ २ ॥ ॥ सिन्हाज्यावनेबलेतिलहिलमदुभातुहिने
 कोनेजिनमकालाही ॥ जोलिंजोर्नपाचकीनितिव
 हितभियावयूत्रकेनकीहिनगधचयही ॥ ३ ॥ ॥
 सेत ॥ याहिनेजिनकोनबयाहिनेजिनल्लातु
 उवियभावाहातही ॥ मयतलेनेनकावकुलेयात
 भातुहिनेधामकृदमभातुही ॥ ४ ॥
 रागधाल ॥ होलंनमयकूधनगुमानवहायमतेहिने
 ॥ १ ॥ ॥ हाकतयापकलीनपललोयकावताहिकासा
 न ॥ नुयामुमुलीवहयाचुल्यालानबाहुवातों ॥ १ ॥
 होयवनसविचकनीतिकियालाहंगिसवहयाचु
 ल्या ॥ नमुयटिपतासिदोरीयाहाकगहयात
 न ॥ २ ॥

आप

एगविनि ॥ ॥ हायेहाये राजाजी गति अहद
 सकाए नदह छोडके मधुप गयेहो ॥ ६ ॥
 राज पाच दिन निकले सगरी जनत वीरवीक
 नको संग लिचे ॥ हावा पाते को दुख जेल को ल
 गलिवडु निपातको दासन दियेहो ॥ ७ ॥ ए
 विविदन आये प्रभु को सब वा दिन सुत भय
 ॥ सब दुनी आने हाए पुको अँधि राजा जिको
 सुत भये हो ॥ ८ ॥ ल्याये मेहेनाच दाय प्रभु
 को पद बल्यने को पदिये ॥ ब्राह्मण सबने उगा
 इलियेत व बल्यति पुर मे सनादि भये हो ॥
 ९ ॥ बीजन हल धी हल मो जङ्ग वाहुडा प्रभुके
 सगरी मा संग हो ॥ उरि दीयो अफी स
 पहर को कोही आगे को हरे सिद्ध हो ॥ १० ॥
 आर्षी घाट पदुचे सगरी सुंदर ^{विवा} नई लि
 पो ॥ तब प्रभु को सिता बहायो नाना सगी
 ध सोडाह कीये ॥ ११ ॥

राग

अवकाहा देसन पाउ मेह पुवही गयो देव विधाता ॥ १२ ॥ वर
 पुन तुम भोग वरु तवेय न करयो ॥ विनावचन स्वति सगरी
 गयो तुम मध्य सको मेड मे पारी आया ॥ १३ ॥ पुन हित पल

को सो जात हात मल २ आज गुजरे सुपि ना क
 ल को ड मत जाय सजु रो मल आज गुजरे सु
 पि ना कल ॥ क क म से आय है आग मो : लिष
 विते साधु सो वत मे सीष साधु कि सो वत
 मे : हामा गुजरा मय सुष मे ॥ क क म से
 ताप मे सो सदा रो दिल जा नही जा पल न
 घरी मे सुष से वदना म सजु वत चला हिम
 धले चल : आज ॥ १ ॥ क क म आया क क म
 म काया र म काया नही की सेना वाल सन
 मजरा ड कल चला डोड हमा ऐ सा : धा
 म तो मरु या जल मे आज गुज ॥ २ ॥
 मे को ड मा ड वेना कल हच की के सिंग प ॥ को मे दी दि
 वि वि द ५ एव म अ भागी नो

[३३]

[३३]

रग लावनो

देवोऽस्य ह केला बाल धरुनो ये सो मति जाया है ॥ १ ॥
 सुन्धा वदन कमल दल लोचन देवत चंद्र लजाया है
 ॥ पूर सावर्णिक बाल वरुण भित्तो निष्पन्न नंद वरुण
 या ॥ २ ॥ वाम नो मकुट पितम्बर लोह देल तिल द्रु लगाया
 है ॥ कान कुण्डल गले विच माला केरी २ भागु की विहा
 ज्या है ॥ ३ ॥ लख वक्र गडा पद्म भित्तो विच भू जग प
 बनाया है ॥ पाने श्वा पुत्र कोत मत्स्य म जल मति सुत
 कह लाया है ॥ ४ ॥ मधु कंद वीर हाथो वाम न गम
 पदा लाया है ॥ वामा कर्म प्रगते न हरी वपु जग प्रह
 ला दे कुदाया है ॥ ५ ॥ वसु एम वद नि कल द होय भोव
 का भार मितया है ॥ कालि मर्दनो कल नि वरुण न गो
 पितार्थ कह लाया है ॥ ६ ॥ मरु मुदन माधो मकुट व
 भू भग्न वरुण पद पाया है ॥ दामोदर गि धि गोपा
 ल हरी विभू वन पति मन भाया है ॥ ७ ॥ शिव मन कादो
 द्रु भू वीरु दिक से सह भुव गाया है ॥ सुनि
 मुके च्या न न जा वत अध भूत जादो माया है ॥ ८ ॥ लोच
 विल प्रगत होय वृज मै लुट २ दां द काया है ॥ पाना
 नंद कल मन मोहन च पा कमल चित लाया है

गगविभास ॥ ॥ देखो धेकवाला जोगी को
हमारे आर्त ॥ ६५ ॥ अंगविभुत गले हृदय माला
लेस बगले लवताई ॥ वाके जलो दातिल कचहा
ये जोगी जता कल पाया है ॥ १ ॥ केला शपाव
न से उन्नी दागी वर मक्ष लोक से आई ॥ भीष्टा
देहो नंदवावा भीष्टा मागत आई ॥ २ ॥ था
ल मर भाई कंचन ल्याई लेहो वावा जी कोली
मे ॥ लेहो जोगी जावा आलन हमारे गोवाल
दाया है ॥ ३ ॥ नदी वाही तेरी दुनी जा दोलथ
नदी वाही तेरी मातने ॥ तुमारे गोवाल को वाहा
ल पाव दासन खाने आया है ॥ ४ ॥ वास
ले केजी कले नंदवावा जोगी ने दासन पाया है
॥ गीन हाद के घी के मक के सिंदी नादवजा
या है ॥ ५ ॥ वेदे जलो दा मागत तेरे वेदी वाल
घनु मने पाया है ॥ गीत नी लोक कर्त अंग
ज्यामी वाता रूप देखा पाये ॥ ६ ॥

राग राग ॥ ॥ गे लत मो दुत मो ही की लता
उ ॥ १ ॥ फल मदे नरी कल मला मदे लात
नी या मदे राविका मुह मदे कनका ओलत
मो लत मो ही की लता ॥ १ ॥

केरि मन पहुतानाही मिलेगा ओस एविति जावेगा ॥
 १॥ धन जन मान माटि पड़ेगा धन जन मान बहू
 वेगा ॥ धन जन मान दुति गये हैं जम के गोता धावे
 गा ॥ १॥ उडि चली है सा प्राण चले गा काया कर्म
 दुति जावेगा ॥ जी जरा वकी जी जरी गये हैं वृका
 गा बुनी धावेगा ॥ २॥ हो पर चित नही रखता है को
 डी पर चित लगा उता है ॥ कोडी मुम एगा प्राण चले
 है जी जरी धाग उ एवेगा ॥ ३॥ साम लिला हरे दाम
 कहल है हरि रस अंशु तापे वेगा ॥ चेत नापुतु खने चेतति
 को है अमरा पूर्णि मिल्य गा ॥ ४॥

वृभाई मिले धुरेवनः जाय २ सितारें काये ॥
 अपन नयन - मुख का मितास - जानि दुख ली
 गल - का - दिख - दिखो ॥ ध्वजगत
 गिरि दुख कर वदनी

मन्त्र विवेक मन्त्र साव विद्यामिरिजापुर के जा विद्या
माय स्व हेतु मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
हेतु मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

श्रीगणेशाय नमः सुकिनाग सुतावा श्रीकृष्णविरच्यते ॥
 १॥ इति गद्यानामयण आद्योवा मा ह्यदेव बु
 नी मोजुद एतनयाय ही ॥ देव दको सयागुरु
 श्रीमा लममप्य चार मगवानद एतुय मय ही ॥
 २॥ श्रीविष्णोवा धी एसाजु नद सुवि धी एन मास
 पीतिथया गणो राया के वने ही ॥ बालाजु या ना
 एय ए पुषि वेल का मना मयजु सपीतिथया ग
 त राया के वने ही ॥ २॥ भोला जन्म च दे
 उवा गेल क राठ ना ही जो क राया द एतनयाय
 ही ॥ विष्णोवा धी वाग मूव मुनि वृद्ध हथे न मरि
 विगद एतनयाय ही ॥ ३॥ शक्ती देव वा वरुणो
 गिनी सोद ह लाल लुद्ध च गु नाग द एतनया
 य ही ॥ इदं सया सर चोत ठो मिदं सवाल क मा
 रि सुय विगद एतनयाय ही ॥ ४॥ भोद सया
 चंदे श्वर नम वृद्ध धर्म एतनयाय नति समी ल लुद्ध
 वने ही ॥ गणेश उवे म गु नाग द एतनयाय
 गु न व धा ए माल लुद्ध लव ने ही ॥ ५॥ भर्ग देव सया
 मा हा देव को दे सया य गु वा एही क र नामय द एत

रायाय ही ॥ वतु भूत ना एया ए ह्य ग या वतु जोगिनी द
 विता कानो दरु स न या य ही ॥ ६ ॥ को हो या बाल अफे
 कित पाया वाग मो वा व लिय या नि वा ए ही के के भ
 विद र स न या य ही ॥ ७ ॥

नै लो ना रुत तेज

राग निगट

पर वाधु नु नु नु नु बोले ॥ १ ॥ चक तरी रंग वि र गी पि
 उरी रहे गुन चारो ॥ कट न्ये को ज कल दु हे वनी र बा ए
 चागा ॥ २ ॥ एक भ च स्वा मै नही देवा कु ना मे लागी गय
 आगा ॥ पानी जली गय म धो ग ली गय मो न आ च न ला ग
 ॥ ३ ॥ द स हं दी का दल सा वा हे चौ ध भु व न स व हा या
 ॥ पा वल न्ये जि या ग बोले न मे रे भ च न न ला गा ॥ ४ ॥ कह
 य की वि सु नो भाई सा धु पा ह पद हे नि र वा नी ॥ जो य न्द
 को नि आ क ले ता को न कि नि सा ना च वा ॥ ५ ॥

राग

पारि मला दे दोल व ध्या मो हे र ए न मां भ ह ज न

मनियारामवदुअजिहमारोः दुखएवणमिताहो॥ चुव
वाएलियेजुहुकियहमनेः रथसारथसवधुएपरि॥ ५॥
कोधमयहेजवदुव एवण मेवाएदुनु परखजो॥ यहव
नमुनीरामप्रसेनभय गिद्वएजदेमुक्तको॥ ६॥ दुव
एवणदेकलसंहाएण रामरूपधो॥ सुरदासप्रभूप
नएणुपातीगारु मोहीअधमदेकवयादकरे॥ ७॥

रागभजर

मानुववनहमारोएजाः यतनीया आजहमारो॥ १॥ भि
स्मकण दुजोधनराजा सवमिलिमत्रविचारोएजा॥ पा
वग्रामकोपाण्डवदोज्ये ओसवतिहारोएजा॥ २॥
दक्षिनदेसपक्षिम धनाग्रह मोलोदेसवगालोएजा॥
गजहस्तिनापुर वैठ कदिज्य ओसवतिहारोएजा॥ ३॥
हाटकतिया कानकम रिया मालम कुतथायवलो
एजा॥ राजनितितुमकाहाजाने गोवाचह्रावनतिहा
रोएजा॥ ४॥ नामेकिस्को आजोदिनो ररासंग्राम
विचारोएजा॥ पारयो जुहोएनु धालिनाउ चारावा
र पहाएएजा॥ ५॥ अंधकवोस तुमकाहाजाने वा
लट वचणकरोएजा॥ सुरस्यामा प्रभु बोले सभामे
आयकालतिहारोएजा॥ मानु॥ ५॥



धंदे धंदे धंदे धंदे उग्र बन्दि काली के ॥ ध्रु ॥ ७॥
 दिह पवन्त रूप विष्णु तो उजायते ॥ लिख रूप
 घंट वाजत मिमिकि मिमिकि नाचतं ॥ धंदे ॥ १॥
 विघन वतक तो उपाल माहा काल भैरवं ॥ सिद्धवा
 हिनि देवी दम्भ रुष डू धारि के ॥ २॥ कौटो मुख्ये ते
 नरूप रक्त वारण सोभितं सुभनि सुभरक्त विज
 माहि के ॥ ३॥ ताल मृदंग धोलक मजिग जोगिनि गणवा
 जितं ॥ धधध पपव निनीनी गगग धाकिति स्वाजती
 ॥ ४॥ श्रीगजगजिन्द्र विक्रम साह हात जोरी मा ॥ भगव
 तिके भाव का तहु धुधु जाई को ॥ धंदे ॥ ५॥

भक्ति

जयति वज्रजोगिनी त्वहे जग मायाः चरण कमल धात
 ध्यान भिमल कर काया ॥ ध्रु ॥ मोहिनि महेश के ल मुंड
 माला मकुट के ल ॥ भुक्ति मुक्ति आदि मक्ति तुहे सयल
 जाया ॥ १॥ कंकेश्वरि हर काली जोगि रूप जाल मा ॥
 कमल नयन कमल आमन अंग मनीगम जाया ॥ २॥
 फनिमनिकु डलाति साल साल की तमी भाल ॥ अह
 करत धात ध्यान भिमल कर काया ॥ ३॥
 राज कज लि ॥ केइ से माह देन जरिया नैना लोहे जा दु से भरी
 ॥ ध्रु ॥ आरेक मल कलिया ति हरि मोह के मा न करे ॥
 नख वे सरित थि जाल तक नि कुल निपल कन मि रहते

मैं जमुना साहि जाई होए रूप खोर हेमो जाल रेसा
 ई ॥ श्री गौरी दीये वन जात विद्या वरा मचत गोपि
 गुवा लोरे ॥ इह दीया के दान मागे जसो धाके ला
 लोरे साई ॥ १ ॥ पिता मर के काठ न काटे : प्रलेवे
 जतिके मालोरे ॥ क (उ न चारि) भय होए राख ही एलिह
 यम मोरे प्राणोरे ॥ २ ॥ जमुना के निरति एधनु चहो रेमा
 हन की मवजा वरे ॥ केन चोख नय होए एध

रामभजन

करेया नद के लाला वजा गोवा मरि वन मे ॥ मह
 ल मे चादनी दिकी ॥ बलो बनी पानि न पते ॥

१॥

अवकाजगमेभुलीरहना॥दिलसोदितसमेजा
ना॥१॥ईहसोसरकाभुलिजावेगावेगापि
पाएफेरेगा॥निमकनिमकगुरुधामसुमारनाफे
रिजभरुताउना॥१॥तेरेरिगकालयडाहेके
उतपलखनवेला॥पावतवसेयाएहोकेवक
रेकालपकेला॥२॥यकसिजवकामभेतेगा
प्रमातमायेमेला॥अभयानन्दकहेसुनसा
धुभवसोहनायाए॥३॥

गामजट मरीया

वदितकोतवभिकरोवन्दे॥१॥जवजमगतजिडा
हेमेववनाधीभारीसुसाथायागानिकसिजयने
नाभरीगयाना॥१॥भागिभागपराठनवागानधी
यावहेगीभिर॥२॥नाउनम्पलाकोकधनरुखेवगवला
एगविर॥२॥घाकितिरिफाहेवनरुगिसकपितारु
तभिर॥मालमुलुककोनेचलोईप्राणलगानेनातस
रि॥३॥वादेकेथनीकोदोएदियहेकाकलहोवक
॥४॥कह्येकीकमुनोसमएतामाफुकोतक्रसि॥

जोगिजुयुत जाना नही: कपारिगामुक्ताडवा ॥ १ ॥
कासिवनारस दारिकाकामधनु यक पूर्वस का ॥ दिल
के कपतहुतानाही वेतिरथनु हाय सुखानुहा ॥ १ ॥
तारिसाप पुसपीजा जा अफि पिताथा ॥ यकराम
सजाना नहि वे ॥ अम्बलिड वासुक्ताडवा ॥ २ ॥ सतर
गगजीफा चौपराये इह वे लट हवद रेका ॥ वाजिमजि
ता प्रेमका वे जुवादि वासुक्ताडवा ॥ ३ ॥ धुनिके खवर
जाना नही वे अनहवका जा वाजिम ॥ हेद समी डेल मदि
वाज्य बाहा नुहा सुक्ताडवा ॥ ४ ॥ हेवनहु डत बेलट ए
वाति धुक्केमक्के नासाथा ॥ साधुकविक एकर कारवो ल्य
हरदम साहेव समताथा ॥ ५ ॥

रामभजन

मेरा दिल लागे गय राम फकिर ॥ १ ॥ जो सुचाहत
रामभजन पर सो सुख नाही मगरु मे ॥ १ ॥ हाते मे मे
वा कान मे कश डल: तिन लोक फिरि आय ॥ २ ॥ ध
न दो लट गरव धाय: का भुले मन पकताय ॥ ३ ॥ क
हे नानक सुन भ्राथ जोगी: साहेव मिलि गय सवारी
॥ ४ ॥

उयोहायजिनिस्पनविनातियानाखय॥ अजुगुटीजुलथ
 नीववायाअभिमानमस्यबमनागानीसगामस होखु
 लथनी॥ पिताधायागथीनिविहसमसुतसाखोस्यतल
 धनीकामदेवयाबलनकोथेथुनोमियाकहेजु॥ १॥
 जिनिस्वस्ततकेहेस्पववयादुखफेनवनेसपसिया
 भटगयातवने॥ जिनिथीनसुन्दीहायमदुभूवणस
 जिजितुपवनीवजगनमोहनीजुह॥ २॥ बोधीद
 दोसिमायाकामवसलपावीलवम॥ कायनिज
 वनसादिलवम॥ अपुत्रुषसुखाहायमदुजोसुव
 नम॥ थानीनपरहदगयेवानाताथरेकहेजु॥ ३॥
 कायेहेहएजकुमारगुप्तमोगतोलतावकायथनवि
 उपायमाल॥ वसंतयासमयसकामयाजोमनहावम
 ॥ जिनिस्वस्तकहलवायकेहेजुवहलगाववेहेहेजु
 ॥ ४॥ अजिनीविबद्धिनमुमुपहलीहिलाकेनजिप
 निवनावसविप॥ विद्याआदीजवआदीसाहिजी
 थास्य॥ रुदेगवदरियास्यनतकयझिलतेनुयोदे
 हेजु॥ ५॥ नानाकलनानासलितेदकावयाथाप
 थलीरुमानोयानाविलवस॥ मजिलयोगथपचोनेम
 जिलयोयथपचोनेल्लोचाकायकचसपस्यनिचव
 नीथनेनुयोदेहेजु॥ ६॥ आजगथेजाग्रथनीगथ

लज्जाजुलधनी धुलीतया हव मताया ॥ गधेन प्रवयाथा
 सविर्वरुप जुलधनी ॥ वसपोलया हस्त रवजु हनता
 या ॥ ७ ॥ हाय हा यमप्रिया के सयनास मघनाथे यथे
 वोयका तह मताया ॥ मते २ सह भुविनति मिसा जाली सा
 अरी मिभाटि ॥ विवर्तुप हापाया धे पर सन्न जय माल नुवे
 ॥ ८ ॥ विनतिन योमा नुस्य साके सिह मुनी स्पन दि वारु
 पयाना विलधनी ॥ थिथि मुख यास्य वीने आनन्द जुल
 धनी ॥ वसपुजा यानाया फल न स्वगता जुल के हे जु
 ॥ ९ ॥ वनेनु यो अन्न पु थोया लिसल ववा नुद्रने वि
 चिनाप थवनी मणे नृपती श्री जया वि श्री लज्जा प्र
 काम मल्ल थवया थास निज नवनमलि द्व जुल के ॥
 व ॥

राम वसने न ॥

स्वस्ति श्री राम कृष्णाय नमः ॥ ॥ अर्जुन उवाच ॥ किं
 सुनाम सह श्री गौरी जपति च पुण पुण ॥ यानि नाथानि
 दिजानीतानि वक्ष्यामि के सव ॥ श्री भागवानो वाच ॥ मक्ष
 कक्ष वाग ह वामन विष्णु नारायण सहज नार्दन ॥ गोवि
 दंपुंडरी कक्षः माधवं मधु सुदन ॥ पद्मनाभं सहस्र
 नांवनमालि चक्रजानीनं ॥ गोवर्धन हृदये के संवै केश
 प्रह्वोत्तम ॥ विश्वदूषं वासुदेवं राम नारायण हरी

दामोदर श्रीधर च वेदा तग रू धधज ॥ अ न त क ल ग
 पालं जपे ते नामि पात कं ग म वा कोटि प्रधाने न अथ
 जे धा मता नी च ॥ क न्या दान सह श्रानी प्राप्नोती मा
 नवं ॥ सु मा वा सा पु र ण ॥ मा मि स क द सो ग ग ल
 था म ध्या काले प थं ते नी त्वं प्रा त काले स्म र्थे व च ॥
 म ध्या न काले ज पं तो न त्वं सर्व पा पे प्र मु चे ते ॥ इति
 श्री कृष्ण मु ण सं वा दे विष्णु प्र था ई स नाम संपु र ण
 म शु भ लु श्री रा म स्तु ॥ १५३५ साल फागुण शुद्ध
 कलनाग शुक्ल पालेखत मुराराम मुराराम मुराराम
 स्थिति श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ आदौ राम तपोवनं
 दुधमनः हत्वा नृगं कांचणं वेदे ही हरणं जतायु मा
 रणं मुग व संभाषनं वाली निग्रह रणं समुद्रा
 रणं लंका पु र द ह नं प्रभा व र ण क म्भ क र ण
 मथ न य द दी रं भा व र ण ॥ ॥
 श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ कस्तुरितिलकं ललाटपटले
 वक्षस्थले कोमलं नासाग्रे गजमोतिका कटपले वे
 नुकरे कंकरा मः सर्वांगे हरिचंदनं चतुर्लोकैक
 वमुक्तावली गोपस्थि परिविष्टा ठे गोपाल मुदा
 मोणे ॥ ॥

रग अस्मृति ॥ ॥ सैपालसंतलहेलका वज्रना
 निमाता ॥ १ ॥ इत्येतल धर्मसिद्धि को बलाया
 यामोः गुणन धर्म विनातल काम को धलो भव
 पमो हेन संलु कृषि साकिल सा विनातल लाना ॥
 १ ॥ हुयाया पापी पुन थली दख दई वृभाल पाभ फु
 थ धंधानः वरगन वी पवन जि अधर्मि चाना वी ना
 थ जि व नहु सुख मता वजन मे माता ॥ २ ॥ जन मा जि व
 स्प वल मो पिवाही साहिध नत यम ते हि न जित ज्ञान
 ॥ जनि साहिध का चो ना पालिक संवास को ना अव
 ल काम दहि विनात जना नो माता ॥ ३ ॥ हा क ह्या
 आसा जी भै व गणेश विगंदेव सी हित भवानी ॥ ल
 धल प्य जि अज्ञानी नवदु गहि भवानी के ने म ते जम
 पु र्दे म जगानी माता ॥ ४ ॥

वेतरुके देवा सो विद्यावन जाई हो ॥ वद्रा वन जाई हो मधुवन
 जाई हो ॥ १ ॥ मोरमकुट प ॥ हि एकुल के कान में कुण्डल में
 टीहल के को सुभ्रम ए गल में दा ॥ गल में नयन के माला
 भि ए न चतुरभुज कपकमल नयन ही ॥ २ ॥ स्याम मुख धा
 ने रद्रा वन में मधु मुरली बेंबु व जाई ॥ सोही सुधु सुनी
 त्या कुल उठरु सुव सो स्याना मिसि ॥ म म म म म म म म म म
 खेलन को गइ हो सो सित व ॥ ३ ॥ एधा सो सित व रा सित व
 वी ॥ मृड गदी कुवाजे देव क म म म म म म म म म म म म म म
 गडल में पुष्प व ता वें भान द पुव द खेल एह व ॥ ४ ॥ सु
 धा ता सित व मगन भई हें कल चरण गुण नंगल गाव
 वन मालिको फल चक्राय भक्ति भा वें पुजा की ॥ ५ ॥
 एफि रिके आई हें सो सित व ॥ ६ ॥ वृष्णा संन नाद सुनी
 सब सारद से संग सो शरी ने ॥ ऐन देत दे ध्यान धा गइ द
 रमन उन को वें कथिन हें विना भक्ति सो पा नही होय

॥ ६ ॥

८१५

८१५

४५७५

८१५

१३५

१३५

वे कं एठ लोक सुख धामा ताहा विराजीतर
म ॥ ५ ॥ मक्षक आवागहनर सिंह रूपः वाम
नपर सो राम राम एगु पतिलिय अवतार जय
॥ ५ ॥ यदु कलविय अवतार कलविय सुख
कीरणा ॥ जय नाथ लिय अवतार जगमहि कारणा
॥ २ ॥ जय २ ॥

राग मुल्तानी

अरे जोगी तेरा रामा राम नाही पाय ॥ ॥ कान मे कं
राडल गले रुंद माला ॥ धर धर अल बजगा ३ ॥
राग का हा ग ॥ सुनिला गत है सजिया ॥ ५ ॥ जब सुदि आ
ब्रेत पिहा पाटे ॥ धरति के गई ब्रति या ॥ १ ॥
मे न मानु गा न मानु गा कमिवा दते हिजा नि का म
कि स ते जा के आ ये मुना का त ते हिजा नि ना त जे
प्रसन्न बिहे प्रकल से व इना न गमा ॥ ४ ॥

को न्यनगर सो ल्या यमु गरी पो न्यसत ॥ १ ॥ को
न्यके पुतर को नको मे वक ॥ को न्ये कारण आ
यपर सत ॥ २ ॥ अने नि के पुतर राम को म वक
सिता बो ज को आई ॥ ३ ॥ का हा ते रा राम का हा ते रा ल
अमन को ने विरप ग य ॥ ४ ॥ वन ही मे रा म वन मे ल य
मन ल य म न विरप ग य ॥ ५ ॥

राम मुलानी

कहत प्रहलाद पिता सो मेरे सो राम या धार ॥ ६ ॥
अग ड व ग ड व्या तु म म म म म मे ते हरि नाम ॥ विना ह
रि अजन सो मु क न होई के म जिये सनि मार ॥ ७ ॥ वे
द पाठि पठि पंडीत था के कह न प सो जाय ॥ सब ल
डी क न कि से ल न भुले ताल मु द ग व ज र ड ॥ ८ ॥ य
ह व न मु नि हर नाम कु स को धे बा धे य म्वा ला गा य
॥ ध क ति ये हर नाम कु स पु छे का हो हे बता व तेरी रा
म ॥ ९ ॥ अध म पिता व्या तु म म्वा स मु श ये ज न ध
न व्या पीत राम ॥ तो ही मे राम मो हि मे राम घ र
ट व्या पीत राम ॥ १० ॥ प्र गत भ ये प्र भु य म्वा को
रे हर नाम कु स की बो द बी दो र ॥ सु र दा स के प्र
भु ती हा री दा स को सर त के राम से हा य ॥ ११ ॥ क

बेलटकने याखे विद्यावसुजाहरे मधुवसुजा
हरे ॥ १ ॥ श्रीगोविन्दमकटपराहे एगुलदः कानमेऊ
हउलमोहिनहलकेः कोष्टममनिगुलमेदो
गवमेजयातिके मालाभिगेपुचतुभुजनयनही
जिगां बेलट ॥ १ ॥ ल्यापुसुधुते विद्यावनगेम
पुसुपुलावेन वजाहः विहिसदनीयाकलउठ
केः सुवसुखियानाभिली मंगदके एनबेल
नकागहिलेः तबिसव ॥ २ ॥ एकासविजवरा
शिखेलेः वैजगैमदुगदकुगल देवकीचात
वितव मोहहे गगनमदलमेः पुसुपवरा
वैः आनदपुर्वदबेलटदीयः बेलट ॥ ३ ॥ राधा
लविसवमगनभईहेः कलवराणपुणमंगलग
वहनमालिके फुलवहायः भक्तिभावलोपुजा
करिकेः पाद्यफिरिकेः आहरे सविजव ॥ बेलट
॥ ४ ॥ वल्लासिके नारदमुनिसवः सारदप्रस
गनेः शोभन्य देवमेके आनधातहेदरसह
नसावरे कठिनहे विनाभक्तिमें पाहनही हागा ॥
बेलट ॥ ५ ॥

योमदुमेनेहें नधिचारीदलकोपाहु नामेठठासीरु॥
 पु॥ नोदतमे नामेगर्भरामकोपेर नामामनेनाहलजी
 गकोपेर॥५॥ चारुतादुवसंमवाह मजोरि॥६॥ वानवे
 लून नूनानवभज्ञानने॥७॥ नोदतवर्षतमकवा'सी'
 मातापिताकीगलाधअतिविताथि॥८॥ पदमाद्वकाम
 शुभता॥९॥ अनुचर्चाविषयोचर्चाकामेव नोपि॥१०॥
 चालिलनकागानधिधतरीदधननरमागोचताथि॥
 ॥११॥ तगागुनीअवकागहो॥१२॥ रालआलुसिआ
 नमाचोभता नोपि॥१३॥

रामनिबुद्ध

जानुदेजमनापानी मोहनाः पानीपानीरपानीमोहना
 ॥१॥ शिरपेरघाघाघाघाघा॥ मोदवालवकाभा
 रिमोहना॥२॥ अफयसंगकंदुसिकसिमे॥ हा
 मसोकाददकाइमोहना॥३॥ गागरीकोरेवेयाप
 कटिगे॥ हा मसुनेललजोरोमोहना॥४॥ वंदुमापि
 हिननालकदनकविठुमानेत्यहामहोरोमोहना
 ॥५॥

काहे गुमानु करलेनाः यकदिन मटि में मिल जा
 ना॥ १॥ नदी किनार में धुवा जलट हैं देवन
 होसनीः सारी॥ सुन्दरिका लकरी जलाया
 मुनासिका काया॥ ५॥ मटि खनीः २ सह लव
 नाया लोक केहेः घर में ॥ प्राणा पु म ज च नि केली
 गये सी॥ यद्युते ए न मे सी॥ २५॥ पोद्य लोए
 न मरा॥ २॥ माटी वठ नामाटी विद्या उना मा
 टि कर ले सिहाना॥ माटि सोमटी में मिल जा
 ना हंसा उदी चली जाना॥ ३॥ माटि हे तो वे
 ताह मा रा वेनी केहे वडे भाई॥ तिरिया केहे गा
 षम सह मा रा रुठाना ता लगाई॥ ४॥ योम
 न जो भरा दगरी के पाणि भिजि गय हल माना
 ॥ कहयक विर मुनो भाई साधु निश्चय मर
 नाहोगा॥ ५॥



पाया सिताराम पलवन ही विसर ॥ ध्रु ॥ प्रातः मेरी
 सिता पिता मेरी राम भागे २ लक्षम नृपि क्षीरु माना ॥
 गल मेरा लामि मुख मेरा रामः हिंदी वीचा ॥ सली
 ग्राम पलवना ॥ २ ॥

रामनिगुन

न जानु राम को न्यते रागा तिया ॥ ध्रु ॥ बालु के भितर य
 तालि के वरना ॥ बजा के पिरती तार के माना ॥ १ ॥
 लोग कहे प्रानी अफ नारे २ ॥ दुति गय प्राण जगत व
 य सपना ॥ २ ॥ निमुद्र न अधिकारि दग एन मुसप
 ना ॥ मागि वले पुंदि प्रम के थरीया ॥ ३ ॥ गोमति
 केति रे मे वले निवसेना ॥ गावे गुद एसा जो झील
 रिके मरिया ॥ न जानु ॥ ४ ॥

मेतोदवाएवगुतेरेसाजी॥१॥कंकरचुणिरम
हलबनाया लोककहेघरमेरा॥नाघरतेएना
घरमेराचिरियाहेनवस्यएरे॥१॥आफुतमा
लीजागफुलवारिआफैविरुवाशिलतारे॥काचिप
किकादेरुजनगाराजामनभावेसोहितेएरे॥
२॥घराकितीरियारेवनलागीजोदाविदुतम
यमेरा॥कहयकविमुनाभाईसाधुयव
दिनमोत्तनिग्वयहोगा॥३॥

रणभारथी

मलकेवरगचिन्ताउमनूवातवाहअम्बरगाह॥१॥
सुनगमकाविचसुनतपवनहेसुनहडवाजावाडपा॥सुरतपु
रातेमरतीयकपताहोहेंघटरमेदरसाह॥मनूवा॥१॥वि
नपगवलासुनविनूकानूकानाविनानेनदरसाय॥करति
नूकरमकोविधिनानाआनन्दविनारसभोगी॥मनूवा॥२॥
॥विनानासेकावातकागुतहैइष्टयसवदरसाय॥म
नकाआसनध्यानतगाईतनकातपनबुजाउ॥मनूवा॥
३॥ब्रह्मअग्नीसादिपैवालेअक्षतिलजलाय॥आलावी
सनासवकेकोउसकरलेलजलाह॥मनूवा॥४॥मेहेन
मूलातीनीबकजोलीसवघटअलखजगाई॥५॥नाम

कलनी यामे ठो मतवाला जोगी ॥ १ ॥ आगन भा
 ई गोरख जगाई भिक्षा दे हो मेरे माई ॥ ओर भिक्षा
 हमन हो मांग मया हि मागन आई ॥ २ ॥ तुम जे स्वजो
 गो कोटी धन्य ए आगन की ॥ ३ ॥ जौदा मदा
 रे सो मद विवः फेर करि मद नही पाव ॥ ४ ॥ हम ए कंठ
 ले हो कलानी अष्ट मद दीष डभाटी ॥ आधा एत मेध
 रो हो कलानी जे सपुर्ण को एति ॥ ५ ॥ ते ए कंठ ज्ञात
 वहारी एक दम नही जाई ॥ जौदा मदा रे सो मद विवः
 विना दामा रे मद नही पावै ॥ ६ ॥ हम तो माग मद हि के
 कुरुवा तुम रे दार होइ जा पानी ॥ जौपे तपि देसः सब द सुना
 ई सब होइ गा पानी ॥ ७ ॥ फेर हो र विलु पण्ड गो साही आ
 गण मधुरि वनाई ॥ बि ए सावन पाव भए वै नित्य डधि
 स्यावा ल गाउ ॥ ८ ॥ आठ चाकी टिका कह सो ए वाह्य
 ए मद पिठ ॥ तेन अघावल विलु पण्ड गो साही मरु
 ति मधि गाव ॥ ९ ॥ कोते मोटे मोटे न माझाई पुरुष
 नम कि गो साही ॥ गला हि म शा न वास ह मा ए भाग धन
 कि नागी ॥ १० ॥ श्री धर कठ कि को द जदि गा ग्य
 ए न ह मा ए मनि सा ए कि मने ए धान मरु र की दे ए
 ॥ ११ ॥

मागतमाधनरोटी भवपाल पारै ॥ ५ ॥ हमारे गोपाल
 जिको गोपामिलाई दे ॥ हिररतनजरइ दे ॥ ५ ॥ हमारे
 गोपालजीको जामासिलाई दे ॥ यकहोटो यकलोमि
 गो ॥ २ ॥ हमारे गोपालजीको रोटी बनाई देउ ॥ यक
 कोटा यक मोटा गोपाल ॥ ३ ॥

रागभजर

प्रीत्याके श्रीकरे सोहि पावै ॥ ५ ॥ करुणायकवसध
 भितरसवके वैजलवायेखासा सार ॥ सुमारेकरमु
 नरनमिकछिमे ध्यानलगाय ॥ वा ॥ नाभिकमव
 अलानलेके नामालेधाय ॥ नही लागेघाएपलहिनआ
 यिहाकाहीतयाव ॥ २ ॥ वैकनलगायनवनचवायनमु
 लेजोधायनहीलागेघाडिपलहिनआदिहाथका हात
 आव ॥ ३ ॥ रहेवेसुलवुलायनिरन्तरकरममसवपा
 जे ॥ कहैकावैसुनोभाईसाधुबहुत एाभवजलजा
 य ॥ ४ ॥

मोहं साधिजां गिरवसमान ॥ १॥ विलेखा
 समयसः हलमेव साधिः गुचो मसून भुनात
 ॥ २॥ गलसका हलहरव नङ्गवमुसलपु
 ङ्गव ॥ ३॥ गुह्यवो वेलसः साज्याव गुसल
 नामि हलपुयाव ॥ आवदर एत नलाय वसग
 न निमि सन मुज्जव ॥ ४॥ कलू नामद सगज
 य मत सव भोक्त पथम नलाय याव ॥ मथु
 लस हलस मुखया था स सव ह ॥ ५॥ गुह्यव
 थ ली ग्राम ॥ ६॥ अने क र स्वपति निपने मि
 जुमन पश्याव न गुज स्याम ॥

हलक प्रकुन

ति निपति पुस मणि जग वन यलोका ॥ ७॥
 मना ह न गुल मसते ना गिन भव दया ॥ ८॥ हल
 व ॥ माह न स विन ॥ ९॥

गोपालनपने मते धनी मिन्हाज्या वने ही ॥ १ ॥
 वेसाजिवाले वतिनी दिखे वजोरी मजुवनी ॥ दिव्या
 लखनी वजिमनसजावनी ॥ स्वयजिमननानी छ
 रुखमसियानी ॥ छिचित्र बोधवियमफयानी
 ॥ १ ॥ जातजागवालीनी लमिकलमसियानी दि
 खाल स्वयजिन नकालानी ॥ दिन जोद वनी स्व
 सनु सुते मदे नी लिपत महो हसासादनी ही ॥
 २ ॥ हतास चायसते धनी विनये या यधुन कपो
 लतोलता विववियमालनी ॥ कामजाना सिया
 नी भवर

रामवाहमास

जागिनी हुतो दुनिया हमाउ हविनु के से हुद्रा मे ॥ १ ॥
 अगहन आह नही मेरी त्यामी जासन मधुवन मे ॥ होत
 गदा ला सेजा विदा उ च्यान वहे अफने स ने मे ॥ १ ॥ पुम
 हि चमके गारही मेना हविनु के से हुंगी भल मे ॥ भर
 वे ऊठ विव मधु भले आले न भाद्र मधु वस मे ॥ २ ॥

५५ धमीलिकवे ॥ राग सिन्हाज्या ॥ ५५ ॥

दिगुवसिमिया लाभाजु जितना पलाय धयाला ॥ १ ॥
मेल्पवन्धुला ला षवलवु जुलला सत्पन मासा मा
रेयायधुनला ॥ दिगुवानी थथला थथे निततयला
दिनविया लमलित कोय धयाला ॥ २ ॥ तोह जकतया
ला सत्पन जिमयो ला दिन जितमि साधका आना ला दि
जक दतला मेव जितमद ला मुलेव न्यधासा जीनम फुला
॥ ३ ॥ जुजिक हिमधुला जिहित सने माल ला तव धन
याका यमवा हिमधुला ॥ वचैजक जितला दिगुचित
थथे ला मदु तोह दयका ववने धयाला ॥ ४ ॥ चुल्पा ला
योधया ला गुति संपा यो धयाला हापन सी विचकनि
शुय धयाला ॥ मासं वरं सिलला मेव यावने गला
लिपत सलज्या जुयु जिनम सिया ॥ ५ ॥

गिरिगय कगना
कदर कवार मे

राग

४६ लाला आभुला देवी त्व द्विवा हा लेते ६ को गायिका

५५ ॥ मो ॥ ५

५५ ॥ २ ॥ लाला १५५ ॥ ६ ॥ ५५ ॥ १५ ॥ ५५ ॥

५५ ॥ १५ ॥ ५५ ॥

५५ ॥ १५ ॥ ५५ ॥ १५ ॥ ५५ ॥ १५ ॥ ५५ ॥

हमेरा भाई कवि रवि गरत हीरे गुण गायः तुम जन वि
गरे ॥ १ ॥ गंगा के संग सल ता विगरे ॥ सो सल ता
यक गंगा होई ॥ तुम जन ॥ १ ॥ सुना के संग स्वागा वि
गरे ॥ सो स्वाग यक के चरण होई तुम जन ॥ २ ॥

राग भजन

मेव दुवा एव नु मेरा ऐसा है मेव दुवा एव न ते ए ॥ १ ॥
धुनि नि की कर महल बनाया लोक कहें घर मे एरे ॥
नाघर ते ए नाघर मे ए निया रे नव मे ए ॥ १ ॥ आ
फुल माली जग फुल वारी ॥ आफे विदुवा सिल तोर
कवि पदिका द जन को रे ले जो म न भावें सो ही ते ए
रे ॥ २ ॥ घर की तिरो या रे उ न लागी जो दा विदु त भ
य मे ए रे ॥ कहु य कवि सुन भाई माधु जो म न भावें स्व
ही तो ए ॥ ३ ॥

सज नरुप के मिल कर जाना मेरा देन तुम पर कर्वा ना ॥
 १॥ गंगा के नारे मुदा जले धूषान प्रगत होइ ॥ जि स्की का
 र हमें जोग वने मेरा पियान जे ला हो ॥ अकिल तुम धूप
 पडि एह कोरा पथ एक प्रिया ॥ कोट मो हैं कावना यामे
 रा देल तुम पर कर्वा ना ॥ सज नरु ॥ १ ॥ क कली कचना
 रिक वा बोल न कोल ॥ हम पाँछ विमिधाइ ॥ हास कर धुग
 तं खोल ॥ सज नरु कादू से वली आइ बल गा म हल विधा
 है ॥ गग धा पान मग काइ बैथी क द नु मिली बाइ ॥ सज नरु ॥ २ ॥
 मुना कहें मुनारे से उ न मेरी फाट ॥ कालि मुगि गूजी गित ले
 इ तुम तो मेरी साथ ॥ ति रथ मेरे बाल पट्टि किया ॥ नटा दो
 धनु दोलन लाहि ॥ गले ते ए मुन के गहना वाना मे तेरी नाल
 मोटि के दाना ॥ सज नरु ॥ ३ ॥ सज नरु कालो क विचारि प्यारे
 धोए साटु मेरा मालु होता है गोरी ए मु वल्लाज कहना था

नारद दसमनुवा हरिभजतु विले बनकरो ना॥१॥
 यहिसै सारः काठके भारी॥ समझि रामहि समझि
 पक धरो ना॥१॥ नावत है पर सेवा जो नाही॥ कैसे
 विधि २ पारण तो ना॥२॥ यहिसै सारै मे अग्नि ज
 लाय॥ धनजन २ विरहिनी मरो ना॥३॥ सुरदास
 के प्रभु तमारो दरस को॥ हरिके २ भजन विवत व
 रो ना॥४॥

राग

उद्धवांगीया भगीया भोहा॥१॥ वाजपला गो
 दम्वरु डीमिकि २ जा॥ नावे लागी उद्धवा उम
 जी २ जा॥१॥ अस्त ससि गल्प माला नागरली
 ला॥ भसमस लेप नशिव गल्प रुद्र माला॥२॥
 मनय विज्यापटी शिवके लिला॥ तथाव जगत पीति
 दयावल लीला॥४॥

राग काफि

थाकर के दरवार दुनीना ले चलोरे॥१॥ जनम को
 दुखिया पाप को मरीया॥ कोहि नहि मेरे साथ॥
 वा॥ धिरे २ जावना पाप दु तावना॥ कोहि नहि मे

रे साथ दुनी जा ॥ २ ॥ धीरिय कजिबना आधिरम
रना ॥ हेर हो हेर गुनाथ दुनि जा ॥ ३ ॥

आर्यो

पगुली यदारथ लाय स्याम या आर्यो याय ॥ १ ॥
मुगल दिवाकर शानगत च्याय ॥ फल मुलता मुल नैवि
दे दाय ॥ १ ॥ यक वितन हरी नाम काय ॥ भगति न पु
रग याय ॥ २ ॥ श्री वन्द दे सरी क वरिण दाय ॥
माया मोह द को जिन काय ॥ एक झयो मने सदि पा
ली वल वाय ॥ दिवि नान रज्ज मरु जी उ पाय ॥ ४ ॥

राग अस्तो

दुर्गे दुर्गे तारे रे मी सन्नको प्रती पाल करे मी ॥
ध्रु ॥ बर्ग चर्प हात धरे मी धके उ पर पा उ धरे मी
भुज प्रेत वेताल साथ करे ज्वाला मुखि वह नाम ध
रे मी ॥ १ ॥ भव सागर को चिह धरे श्री भुवरा को प्रति
पाल करे ॥ जोगिनि गगन सब वात करे ॥ अतक न कतक
न कतक नाच करे मी ॥ २ ॥ हिगुला की ध्यान धरे मु
क्ति काव को वास करे ॥ यह पद गावत स्ववक सब को पा
ज हरे मी ॥ ३ ॥

५५

दिललागी प्रभात्मा सो प्रम ॥ १ ॥ कामा पाहे का
मस ताहे ॥ कादनी मात प्रेम ॥ १ ॥ क्या वन का
जन का वरी पा रहे ॥ वने सुख की मात ॥ २ ॥ क्या
वजा ए काद ए का रहे ॥ काय ए प्राण के आस ॥ ३ ॥

रुगनिर्गु

हानं थे जा गुजम काय दर्द मुख हों ॥ ओ स ए
वित्त जमन पद ता वे जू यू ॥ १ ॥ लोमना चोना
जिन जालया पासारे ॥ थथे नीम का व ह खिज
र या ना का ॥ १ ॥ ह रु या दिन स जमन राजा वया
चोमी ॥ थमे या ना गुगु जया या फल पावे जू हरे ॥
२ ॥ आवतु ह्वरी या भजन मया सा ॥ लव को ए
शिजुनी हिले माली खरे ॥ ३ ॥ दको जया पाहा
सथ वगु मन रे ॥ भिनक मन सचक का ही नाम का
वरे ॥ ४ ॥ अभयानन्दन धाल ड ० सा धुपि ॥ आवतु
चे ते यमा ही नाम का वरे ॥ ५ ॥

कानी के पिया जल पानी पगड़ी तशानी ॥ १ ॥
 पकोटी जदुवी सिंगडा घाः और मनी जन कोटी अ
 ठासि ॥ तब मुनी जन का पा हाय मानीः कौन म
 निमै कुत लगाय ॥ २ ॥ माहे मसा मन मे हताः
 गो मसार हे गो सा ॥ तब के मसा जल मे हता
 कौन मसा गुम कुत लगाया पण्डित ॥ ३ ॥ मसा
 कहे होज विहानाः रुडि लो वही २ आह लोही
 दिला के अलानु क साही के से से ३ ॥ हंड
 लिगली दुड विहानो लोही दुड दडी याज मा ॥
 लेही के या के नुमारी ने ज कही साही ॥ वीरुपि
 व पाज ॥ ४ ॥ वास को करु मजन पही एय वास
 ति को कापही एया ॥ मात मात का सुखी वीर
 याड न का कुत न वाया पंडी ॥ ५ ॥ धीर धन
 यव न पाय नागु न चा चेला ॥ वदी न के हान मा थ सुडा
 य प्रम हें यद ला मे ना अज वदी न का हें मे वें एगे

राग अस्तुतो

२१

कौटिल्य सुतभेरे वीः भिमनाथः भज्य ॥ १ ॥ लाल
 अटिः सुधरं वरा सुभ लोचरां ॥ कोटी रटि जो
 तिसवज्जाल माला ॥ १ ॥ शिरमकुटः भुरवरां लमि
 किरा जोरां ॥ मनि कन ख करड लीः सहस्र वारी
 भज्य ॥ २ ॥ शमल दलनायकः शत्रु कल नासकः
 ॥ सकल गरा पुजीतं भिमनाथ भज्य ॥ ३ ॥ दक्ष
 सत्त गजावर रतिपुहासकर ॥ दुख दुजा धन्य
 उगतीरे भज्य ॥ ४ ॥ अवतोनपाल के अंकपा
 सग्रीहे ॥ दासभक्त सबभिम पुकारे भज्य
 ॥ ५ ॥

राग अस्तुतो

नंदपुरियराणी मनका मना देवी त्वहे ॥ १ ॥ वीद्व
 वर दायनी सकष्ट कोनासिनी जोग तको पालनी
 ॥ अमय वरदायनी जोग माया देवी ॥ १ ॥ सिंध के
 बाहीनि बडु वपर धारिणी तसकि धर वलीय
 वी भुल धारिणी ॥ २ ॥ जोग के मातृ हे भोग के मा
 तृ हे ॥ कृ के मातृ हे मभु राणी ॥ श्री राजराज्य द
 विक्रम साह कपाकरो सरसी त्वहे मातृ राणी त्वहे
 ॥ ३ ॥

काली कल्याण करो मेरी माता सरणागता ॥ १ ॥
 आगे वेता पिछे पिता सब दुनीया मेरा कहता ॥ २ ॥
 कआउता एक जाता यह सबो सा सब कुछ द्या ॥
 १ ॥ धन्दे का काली श्रीमाहा माया धन्दे दुमारे
 दया ॥ ॥ धिनम्य पकरे पलष मे लपगय दुनीया स
 व अचम्ब मानी ॥ २ ॥ चार भुवरा मे वो सठि जोगी
 एि वा मुन्दा देवी चन्दी का ॥ चार भुवरा मे हरता
 करता तुम विनुः अवा नही ॥ ३ ॥ धन सं पटी मे स
 व कोही आफना विपत कोही नाही ॥ रोग वे
 ग भु पकर के लपगय यम को दोस नाही ॥ ४ ॥ वा
 ला बृद्धा तरुण सब को रखा वही बल ताहें ॥ को
 ता वदा कह नाही दुमारे सरण मे आय ॥ ५ ॥

जयसी जग जननी ^{राम अलौकिक} अमर पांडेनी जधानदी हो ॥ १ ॥ गाव
 त भु मुनी जन ब्रह्म जानी ही जिवन को लेखानी ॥ कृपा
 रो हो महे अरुणी दास जानी हे ॥ २ ॥ सकल धर चरीतानी रूपी
 वाल पृथु जुवान रूपी ॥ विविध विदु कुल रूपी नित्य भूपाया ॥ ३ ॥
 त्वहे जगदीश एणि अर अमर लवके सहा एणि ॥ जाति मे का
 हि नति बखानी वंधवानी हो ॥ ४ ॥

सातही बोला ॥ सातही बोला ॥ सातही बोला ॥ सातही बोला ॥

राम राम । । हमें मंतरों के नवल व्रीज गोरि ॥ १ ॥
मी हके प्रभु गीत बिना घर ॥ तुम तो मोरे धाक रहस्य गोते
हउगि स हमें मंतरों के नवल व्रीज गोरि ॥ १ ॥

राम सखी ला

आजो विद्यावमरा सखा को नय ॥ १ ॥ अमो
वैलो मयि देखे न चली य आजो विद्यावमरा
सखा ॥ १ ॥ वैद्या प्रकर हिले कली गी आजो
हम ह राम ॥ धाको नग ॥ १ ॥ वमने से हिले कर
त ॥ राम लखे न ह नचाव देखत है देखो सदा शिव राम
धाको नग ॥ २ ॥ ललितालिय हो भिडंग मोहन
वैनु वजाय ॥ वैनु वजाय ॥ राधा वैनु वजाय आजो राम
धाको नग ॥ ३ ॥ सव सखि कियो भुंछा एक समय
कवनी ॥ एक वनि राधा एक वनी हो आजो विद्यावमरा
सखा धाको नग ॥ ४ ॥ फूल फुले फूल वारि फुले प्रे
म कली ला राधा प्रेम कली आजो विद्यावमरा
राधा को नग ॥ ५ ॥ मुरदा ल प्रभु हात जोरी स्था
मवनाय ॥ स्था मवनी राधा स्था मवनी आजो वि
द्यावमरा राधा को नग ॥ ६ ॥

१६॥
गेते

मोहणसोऽथ जिविवसमानः जिविवसमानः
वसमानः ॥ १ ॥ बलिवा समयस हाल स्वव
विगुचाससुभुनावे ॥ २ ॥ गलससका हाल
रुवरा ३० जवसुसलमूजव ॥ १ ॥ नूद्वेवेलस
सांरया वगुसरसनेसिहसप्रयावा ॥ आवंदरसनला
यवसगनजिमिसनमूनावे ॥ २ ॥ कुरुनामदुलिव
जायमतेखवः भालपथमनमालियाव ॥ मधुरासह
रसुखयाथासववहु इति नूद्वेवसैग्राम अनेगरस
बनोजिपनीमनुमनी पायावस नूलस्पम ॥ ३ ॥ ह
कहजकुमदिनिपति प्रहखमनी तजयनखयाव ॥
दुमनाहेनगुलससतेनाजीनभमलयजितखान ॥
॥ मोहण ॥

पानी का तप राका मरा ॥ ५ ॥ जल के भितर पव
न के बम्बा रगत बुदन के गा ए हाउ मास जो नारी
के पिंजरा पंढी बस्य ब्रवि चारा ॥ ५ ॥ वाके बगरी
रिरे तोहि बान डू बै भसम की धरी ॥ वाके कल
उस सोतिठी मान्यः बान डू बै भसम की धरी ॥
२ ॥ उचो माद लसै धर नारी राम नाम विनु बाजे
हरी ॥ जात कमेनी पाट कम्पनी निचा जनम
हामारी ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ राजा राम चन्द्र प्रभु सर नागत तेरी
कीह गय रोई दास बन्दा ॥ ४ ॥
राज प्रसादी

कलन लिनै सो सत वा ला जोगी ॥ ५ ॥ अ आग
न आइ गोर खजगाईः भिक्षा दे कुमो ला ॥ ओ
भिक्षा हम नही मागे मयही माग न आय ॥ ५
॥ तुम जैत्य जोगी कोली घने आगान पिंरि रजा
ई ॥ जो दम दौने मय पिंवेः फोग दी नही वाय
॥ २ ॥ समाए कै ठाले होक लालीः अय मय पिंउ
माटी ॥ आधारातु मे वर होक लाली जैत्य पुरा
किट्टी ॥ ३ ॥ तेरो जो कै ठाल लव हाटी पद पम

रितही जाह ॥ जो दास दास सोमद पिते विना दास मव
 नही ॥ ४॥ हम तो मागे मदही के कुदवाः मुम तो दे हा पा
 नी ॥ जपित पि देस सब द लु नाई सब होई जा पानी ॥ ५ ॥
 फिरे शिवे क पीठ गो साहो आगन मेधु पी वनाई ॥ बिहरी
 सावां न पत्र मग व निते उ थी से बाल गा उ ॥ ६ ॥ आठ व
 की काह हमारे बाह दया मद दिउता तेन अछा वत वि
 क पीठ मो साहो म हूत मो ठ गा व ॥ ७ ॥ केति गा र जता वा
रग आमावा ॥ ८ ॥ प्रव ज न म कि गा ता

क नाजी यातन मारो मुगा मटो जाय मंस विना य मटो आ
 य ॥ १ ॥ उर विरुः उर विरुः पंख बर ए विरुः जल साहे ए विरुः
 हंसा ॥ उता जल के मारो जो ले यावा ता के रक्त न संसा ॥ २ ॥
 नदी या पा र म्य बेल को विरुः तन मे पहा जो नाही ॥ सो बेल
 उरगी ॥ सावत हरी नीः तन हरी नी के सि नाही ॥ ३ ॥ हम त मे
 लवा ए धुक्रोः तन मे पंजा जो नाही ॥ वैधत पाण मा त न
 ग वाः तन न य सा केः घाव नाही ॥ ४ ॥ कहय के निः पुनो भा
 ई सा उ य ह पद उ का बल को ही ॥ जो य ह पद उ का बल सा
 हि उरु हाम मय बेला ॥ ५ ॥

सोमप
 श्री वीर उ का क को या व जी ठ गा गो र व गु द हमार
 ॥ कति सा र की न गु द हमार ॥ ॥ मा न म ता न को
 दण ॥ ५ ॥

वि ॥ गला हि म सा वा न ह मा

प्रभावन का ते दिन रुह मे उदासि ॥ १ ॥ फूल फुले
 औरे दारि म फुले और फुले क पासि ॥ जिवान न के
 पिहाजर लव ॥ २ ॥ मेरे पिता पर देस ॥ ३ ॥ विरके:
 सिंदूर ने ना गा जल हात के कंकन वाही ॥ पिहा
 मेरे से गो पर देस गई है जो भन भए पुन नही
 ॥ ४ ॥ रोह २ ने ना निवह न लागी है: चोलिया अ
 गा भि जाय ॥ ५ ॥ कतिया पिहा के खवर नही पाय
 मला चि चके बुझाई ॥ ६ ॥ सपना मे वैठल पलंगी
 कतिया मे: प्रेमा के पिर तिलागी ॥ कप ए सिव
 ली चोई सुजात: चोदि स आनंद होई ॥ ७ ॥ सा
 था के संगि सव वोल न लागी मे विरहिनी ल जाय
 ॥ ८ ॥ २ कामिनि हात न लागे से जा मे एक वरु न भा
 य ॥ ९ ॥ न मे माता न मे पिता न मे एत होद भाई
 जा दन गतो वि होद भई है: जोगिनी जोगिनी मे
 मे चली जाई ॥ १० ॥ आस तहा सब देह तुमा ऐ यक
 द उह मा ऐ: जैसे कामलो विदि पहा मा ऐ: बोध
 जो भन गु माई ॥ ११ ॥ छुचु कवा दल बोदि साई ॥ १२ ॥
 विना मे य उदवा लाय ॥ १३ ॥ जे आह मा रो पद स गाय

हे ॥ ८ ॥ आवण भास मेघ न धौ रजा जे: भिजे चादा
 वोलो ॥ आवि (मो) चेत ड दासि के कन को एषा ना
 हो ॥ ९ ॥ जनु मुनि धो वासन लागे बाल पिहा ठ
 दासि ॥ वमक टियु मुनि ज न लागे पिहा मे भिजत पर
 देम ॥ १० ॥ तलवी ना क प कलि गुग प्रसी मे दुनी भा न
 कोही ॥ पिहा वि न ना मु मुठ न लागे न न म उ का प जा
 ई ॥ ११ ॥ मि मो मे भिजे लागे ल हंग एत भिजे त एवा ॥
 गम काम संत प वत वने मो हे का ही भिजे उ प का ही ॥ १२ ॥

राग विहा ग

राय धन कुति गय प्रेम प्रियारी: अव का हो देवन पाई ॥
 धु ॥ जवा दन तु म सु प्रति भय प्रभ माया वहु तल गाई
 ॥ वि कु त भय प्रभ प्राण मरि के दि देवन का हा पाई
 ॥ १ ॥ तुम विन मी कल न पर तु हे मिम तल य मी
 रिग ॥ सम जो हा मारी जिया वै त गी के से (याज) या मरी
 ॥ २ ॥ हम प माया वहु तल गाय या को ने अध म कुता
 य ॥ तुम विन मे जी या वै ए गी को व उ या य मु पाई ॥ ३ ॥

भर कटो दिनः रहे लोमे उदासि ॥ १ ॥ सपनो मे दे
 धिल्लः पलंग पर सुतैः प्रेम को पिरती नाहो ॥ प्रभु वो
 नामे रीस जस मुन्यः बोदी गवोजत नाहो ॥ भवरा ॥
 ५ ॥ साथ की संगि सववो लन लागे मे विरहिनी वी
 लखाई ॥ घर २ कामिनी करत भुं गार पिया मेरी क
 टन जाई भवरा ॥ २ ॥ अंदधुं दवा दल लागे घे
 रा २ गरजत मय ॥ चमकट विजुली गरजन लागे
 मेरी मेलाः कवहु न आयः भवरा ॥ ३ ॥ न मेरी माता
 न मेरी पिताः न मेरी सवदः नाई ॥ यक प्रभु मु
 विहो दहोई जोगीणि के चली जाई भवरा ॥ ४ ॥

राग आसवरी

होत स रंग बनाई प्रभु जी ॥ ५ ॥ फागु रासा समैः फगु
 जावेल्ये गोपिनी रंग बनाई ॥ गोपिवाली नीज माना
 निकटे भापै गोवा चढायः प्रभु जी ॥ ५ ॥ चैत्र मास मे
 वरा भाई वीज्यः कदम बुझा २ आयः ॥ गोपिज मु नामे
 निकटे उहायः कलम गु बेल न आयः प्रभु जी ॥ २ ॥ वे
 साव मास मेः धुप वढायः गोपिनि चवरो लाय ॥ च
 वर लेके जवाली नीहा केः कलम गु मु रली वजाय ॥ ३ ॥
 त्य व मास मे

लालहो ॥ बालापनमें लाल लपिटी को न्य बुझावल
 बात ॥ माता पिता विछोड काले कैसे कटु दीन रात ॥
 १ ॥ हिरा हो ॥ यकही रंग की पहरे रा पहरे दूः चढ
 ल्ये घोड वांके पिड ॥ रयनी चढ ल्ये दुरु दिसने
 न्य बुझावल प्रित ॥ २ ॥ लालहो ॥ जो हातु मने सो
 दाकर ले सबको ही पुछल बात ॥ अवन पुछल व
 नीया बजार मे काहा गय मेरी लाल ॥ ३ ॥ हिरा हो ॥
 उनही तपस्या कुतल नाही ॥ और मेतावल जो ही ॥ दे
 वदी हल काही साही यह देखी हो ह ॥ ४ ॥ पादे सा
 हो ॥ कौन्यदी सासो तुम चली आय कौन्य दिसा तुम
 जाय ॥ कौन्य तुमारे जात वीसि कौन्य का राग आय ॥ ५ ॥
 राजा तुम हो ॥ पुछ वदी सासों हम चली आय ॥ यही म
 दिसा हम जाय ॥ रजपुत हमारे जात वीसि कौन्य का राग
 राग आय ॥ ६ ॥ भव काहा पाउला मेरी लाल ॥
 ति वंधु भाई जो नाही ॥ जो लै चचे वाकी पिता तेह सा
 रों वन मे गयो मेरी लाल प्रभु मेरी ॥ ७ ॥ पादे सा हो
 ॥ कौन्यदी सासो तुम चली आय ॥ कौन्य दिसा तुम जा
 य ॥ कौन्य तुमारे जात वीसि कौन्य का राग आय ॥ ८ ॥
 मे चमला हो ॥ पुछ वदी सासों हम चली आय ॥ यह

माँसा हाम जाय ॥ एन पुत हामा रा जात वीसि मुल
 काफिर रा आय ॥ ८ ॥ हिरे देवी हो ॥ संध्या का लकोन
 गुरु देवा बल दुनी जा सब द २ जाय ॥ सम जो हिरे आ
 गे को कासि करे प्री बुद्धि प्रकास ॥ ९ ॥ काजी मान लि
 हो ॥ हिरे का सब दः आवाग मनी लपः चित मयल उदासः
 नोन प्रकास हिरे पद चव कट हो बुद्धि प्रकास ॥ १०
 ॥ राजा उदय चन्द हो ॥ विगन विनामिनः कुटनी वो
 ली ली चन सा कर हो भली बात ॥ बद्ध गुरु नली ली
 ली ली कर लप उदय प्रकास वाट ॥ ११ ॥ विगन विना
 मिनि हो ॥ हिरे को मो हो दा सपे नालि देवी जी प
 ली लि चो नही आय ॥ मोन प्रकास हिरे पद
 ली ली हो मो हो नी के वात ॥ १२ ॥ राजा उदय च
 नदी प्रकास के मो हो नी मस है उदय च
 ॥ पठत हो वै तनु नही राजा टिन मूव
 वी ली ली १३ ॥ नदी मो हो ॥ विनामनी का टिन
 कुनी या चरु ले की गीया बहना बला उ ॥ बहना
 ली ली ली टिन नी घात ताहा पद चाय देउ ॥
 १४ ॥ हिरे ली ली ली ॥ मो दिन तम को लालने

[illegible]

रामानन्द

जिनपितैरुमरसपाताः हृदयमतवालेन
ववं ॥ १ ॥ ॥ मूलवकते एवन्दतगाहः ॥ २ ॥
पुवनचक्रा ॥ ३ ॥ आसनमारि मगनाविववे ॥ ४ ॥
रुदमुदसुनताय ॥ ५ ॥ इदापि ॥ ६ ॥ सुवपना
ना ॥ ७ ॥ उन्मून ॥ ८ ॥ वेला ॥ ९ ॥ हस्तकनकमल
विषयाकुविगज ॥ १० ॥ हेवना ॥ ११ ॥ वि
ना ॥ १२ ॥ तिके ॥ १३ ॥ लवनाया ॥ १४ ॥ वि
विषयादिवकते ॥ १५ ॥ लउ ॥ १६ ॥ जोको ॥ १७ ॥
मवना ॥ १८ ॥ वासनादेवनि ॥ १९ ॥ विना ॥ २० ॥
मवना ॥ २१ ॥ विषयाक ॥ २२ ॥ विना ॥ २३ ॥
मवना ॥ २४ ॥ विना ॥ २५ ॥

रामानन्द

मायासेकोहभक्तिमजगत्तु मनायामेकोह
ति ॥ १ ॥ वाहभक्ति ॥ २ ॥ विना ॥ ३ ॥
मकोकोमिजगत्तु ॥ ४ ॥